

भारत भारती

शि
६८

नेलुगु



प.प.प.

Vinay Avasthi Sahib Bhuvan Vahi Trust Donations

भारत भारती

(तेलुगु)



**राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
वर्धा**

प्रकाशककी ओरसे

समितिका बोध वाक्य "एक हृदय हो भारत जननी" अिस बात
द्योतक है कि सारे भारतमें अेकता प्रस्थापित हो । अेकता-प्रस्थापनके अि
की पूर्तिके लिये समितिने हिन्दीके व्यापक प्रचारको आवश्यक माना
और अिसी दृष्टिसे वह अुसका प्रचार करती आ रही है । किन्तु आज
परिस्थितिमें अेकमात्र अितनाही पर्याप्त नहीं है । आज तो सभी भारतीय
भाषाओंके ज्ञानका आदान-प्रदान अेकता-स्थापनकी दृष्टिसे आवश्यक
अुठा है ।

जो लिपियाँ देवनागरीसे काफी दूर हैं, भाषा सीखते समय अुन
सीखना और लिखना विद्यार्थियोंके भाषा-सीखनेके अुत्साहको भंग कर दे
है । अिस कठिनायीको ध्यानमें रखते हुअे समितिने यह निश्चय किया है
प्रान्तीय भाषाओंकी परीक्षाओं चलानेके साथ-साथ अुन भाषाओंकी पाठ्य
पुस्तकें भी अुन-अुन भाषाओंमें किन्तु देवनागरी लिपिमें तैयार की जायें ।

अैसा करते समय यह हेतु कदापि नहीं रहा है कि विद्यार्थियोंके
प्रान्तीय लिपियोंका ज्ञान नहीं देना है । प्रत्येक पुस्तकके अन्तमें परिशिष्ट
रूपमें प्रान्तीय लिपि और अुसके सम्बंधकी जानकारी
सीखनेका भार प्रान्तीय भाषा सीखनेवालों पर
अिचार रहा है ।

यह ध्यानमें रखा गया है कि पुस्तकको तैयार करते समय पुस्तकमें अतिनी सामग्री दी जा सके जिससे पढ़नेवालेको सामान्य वातलाप करनेका ज्ञान प्राप्त हो जाय और दैनिक व्यवहारके शब्दोंसे वह परिचित हो जाये। क्रमशः विकासकी दृष्टिसे इस पुस्तकको तीन भागोंमें बाँटा गया है। पहले भागमें दैनिक व्यवहारके अति प्रचलित शब्द तथा अत्यंत सरल वाक्य दिये गये हैं और दूसरे भागमें उससे आगेके शब्द तथा वाक्य। दोनों भागोंकी यह सामग्री सभी पुस्तकोंकी समान है। किन्तु तीसरे भागकी सामग्रीमें उस क्षेत्र विशेषके प्रसिद्ध-प्रसिद्ध स्थान, व्यक्ति, कविता, कहानी और मुहावरे-कहावतें आदि की जानकारी दी गयी है; ताकि विद्यार्थी उस प्रदेशसे भी थोड़ा परिचित हो सकें।

81

राष्ट्रभाषाके पुराने कर्मी श्री. सिद्धनाथ पंतके सुझाव हम, मूल्यवान रहे हैं, प्रान्तीय भाषाओंकी परीक्षाओं चलानेका सुझाव हमें प्राप्त हुआ। परीक्षाओंके लिये पाठ्यक्रम और तदनु रूप पुस्तकें तैयार करनेकी रूपरेखा तैयार करनेमें श्री रामेश्वरदयाल दुबेका सहयोग मिला उस रूपरेखाको क्रियान्वित करनेमें भिन्न-भिन्न कार्यकर्ताओंका भिन्न-भिन्न रूपमें सहयोग प्राप्त हुआ है। पुस्तकोंके लिये शब्दावली छांटनेमें श्री जमलुद्दीन तुरक तथा श्री अबोधजीने सहयोग दिया। प्रथम दो भागोंका हिंदी ढाँचा तैयार करनेमें श्री श्रीराम अट्टाबलकरका सहयोग प्राप्त हुआ और सर्वश्री पं. मू. डांगरे तथा रा. वा. पाटीलने उसे ध्यानपूर्वक देखा। अनुवाद का तेलगु अंश श्री. क. म. शिवराम शर्माने तैयार किया। अतः अिन सबके प्रति समिति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है।

आशा है, यह पुस्तक तेलगुके अध्ययन करनेवालोंके लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

ऽमु ब्रायंडि ।

मंत्री,

ठि नेर्चुकाण्डि ।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, बंगलूरु

विषय सूची

प्रथम भाग

पाठ	पृष्ठांक
पाठ पहला	१
" दूसरा	५
" तीसरा	८
" चौथा	११
" पांचवाँ	१३
" छठा	१५
" सातवाँ	१७
" आठवाँ	२०
" नवाँ	२३
" दसवाँ	२७
" ग्यारहवाँ	३५
द्योतक ग्यारहवाँ	४१

द्वितीय भाग

पाठ १. परिचय	४९
" २. खातिरदारी	५१
" ३. बीमारसे बातचीत	५३
" ४. परिवारके लोग	५५
" ५. मेरा नया घर	५९
" ६. परिश्रम	६२

तृतीय भाग

पाठ १. आंध्र देश, भाषा और लोग	६६
" २. कृष्णदेव रायलु	६८
" ३. त्यागराज ✓	७१
" ४. श्री राम नवमी अुत्सव श्री त्यागराज कीर्तन .	७३
" ५. श्री कालहस्ति ✓	७६
" ६. राज राजनरेन्द्र	७९
" ७. तिरुपति ✓	८१
" ८. कण्णप्प नयनारु	
" ९. कहावतें	
" १०. कविताओं	

भारत-भारती

तल्लुगु

पाठ १ ला

नीवु ।	तू ।
नीवु माटलाडु ।	तू बोल ।
नीवु चयुमु ।	तू कर ।
नीवु तिसिकॉनि रा ।	तू ला ।
नीवु चदुवु ।	तू पढ़ ।
नीवु वॅळ्ळु । ^१	तू जा ।
नीवु तिनु ।	तू खा ।
मीरु । ^२	तुम ।
मीरु माटलाडंडि ।	तुम बोलो ।
तुम देसंति भा ।	तुम करो ।
तुम ब्रायंडि ।	तुम लाओ ।
तुमि नेर्चुकाण्डि ।	तुम पढो ।

ॐ वँळळंडि ।

६ तिनंडि ।

तमरु ।

तमरु माटलाडंडि ।

तमरु चेयंडि ।

तमरु तीसिकॉनि रंडि ।

तमरु चदवंडि ।

तमरु वँळळंडि ।

तमरु तिनंडि ।

नीवु अक्कड रा ।^३

नीवु अक्कड कूचो ।

नीवु नीरु त्रागु ।

नीवु पुस्तकमु तीसिको ।

नीवु वार्ता-पत्रिक अिम्मु ।

नीवु बीगमु अिम्मु ।

नीवु ताळमु तँरवुमु ।

नीवु बंति आडुम ।

नीवु पाठमु त्रायुमु ।

नीवु मराठी नेचुकाँनुमु ।

नीवु मराठी नेपुमु ।

नीवु अरटि पंडु तिनि पालु त्रागु ।^४

नीरु अक्कड रंडि ।

तुम जाओ ।

तुम खाओ ।

आप ।

आप बोलिअे ।

आप कीजिअे ।

आप लाजिअे ।

आप पढिअे ।

आप जाजिअे ।

आप खाजिअे ।

तू यहाँ आ ।

तू वहाँ बैठ ।

तू पानी पी ।

तू पुस्तक ले ।

तू समाचार-पत्र दे ।

तू चाभी दे ।

तू ताला खोल ।

तू गेंद खेल ।

तू सबक (पाठ) लिख ।

तू मराठी सीख ।

तू मराठी सिखा ।

तू केला खा ।

मीर अक्कड कूर्चाण्डि ।	तुम वहाँ बैठो ।
मीर नीर त्रागंडि ।	तुम पानी पिओ ।
मीर पुस्तकमु तीसिकाण्डि ।	तुम पुस्तक लो ।
मीर वार्ता-पत्रिक अिव्वंडि ।	तुम समाचार पत्र दो ।
मीर बीगमु अिव्वंडि ।	तुम चाभी दो ।
मीर ताळमु तँरवंडि ।	तुम ताला खोलो ।
मीर बंति आडंडि ।	तुम गेंद खेलो ।
मीर पाठमु चदवंडि ।	तुम सबक (पाठ) लिखो ।
मीर मराठि नेर्चुकाण्डि ।	तुम मराठी सीखो ।
मीर मराठि नेर्पण्डि ।	तुम मराठी सिखाओ ।
मीर अरटि पंडु तिनि पालु त्रागंडि ।	तुम केला खाओ और दूध पिओ ।
तमर अक्कड रंडि ।	आप यहाँ आअिअे ।
तमर अक्कड कूर्चाण्डि ।	आप वहाँ बैठिअे ।
तमर नीर त्रागंडि ।	आप पानी पीजिअे ।
तमर पुस्तकमु तीसिकाण्डि ।	आप पुस्तक लीजिअे ।
तमर वार्ता-पत्रिक अिव्वंडि ।	आप समाचार पत्र दीजिअे ।
तमर बीगमु अिव्वंडि ।	आप चाभी दीजिअे ।
तमर ताळमु तँरवंडि ।	आप ताला खोलिअे ।
तमर बंति आडंडि ।	आप गेंद खेलिअे ।
तमर ब्रायंडि ।	आप सबक (पाठ) लिखिअे ।
तमर मराठि नेर्चुकाण्डि ।	आप मराठी सीखिअे ।

तमर मराठी नेर्पण्ड ।

तमर अरटि पंडु तिनि
पालु त्रागंडि ।

आप मराठी सिखाअिअे ।

आप केला खाअिअे
और दूध पीजिअे ।

टिप्पणियाँ: १. तँलुगु भाषामें 'अे' और 'ओ' के ह्रस्व रूप भी होते हैं। ह्रस्व रूप सूचित करनेके लिये हमने अक्षरके ऊपर चिन्ह लगाया है। जैसे 'कँ' के का ह्रस्व और 'कॉ' को का ह्रस्व।

२. मीर सदा बहुतोंके प्रति अथवा आदर सूचक बनकर अेक के प्रति प्रयुक्त होता है। अेकके प्रति सामान्य रूपसे "नीवु" का ही प्रयोग होता है। 'तू' में जो निकृष्टता है वह "नीवु" में नहीं है। जहाँ-जहाँ "तुम" अेकके प्रति प्रयुक्त होता है वहाँ "नीवु" का ही प्रयोग अुचित है। "तमर", "मीर" से कुछ अधिक आदर सूचित करता है। यह अेक या अनेकके प्रति अुपयुक्त होता है।

३. अकार वाले व्यंजनोंका सदा (शब्दके अन्तमें आनेपर भी) पूरा अुच्चारण करना आवश्यक है। "अिक्कड़" का "अिक्कड्" जैसा अुच्चारण गलत होगा।

४. "केला खाओ और दूध पीओ" का रूप "केला खाकर दूध पीओ" ही होता है। "और" का अनुवाद करनेपर वाक्य भद्दा बन जाअेगा।

पाठ २ रा

अतडु, वीडु ^१	यह
ओमँ	यह
अदि	यह
वीडु अँवडु ^२ ?	यह कौन है ?
अतडु रामुडु ।	यह राम है ।
ओमँ बालिक ।	यह लड़की है ।
अदि नीरु ।	यह पानी है ।
अदि पुष्पमु ।	यह फूल है ।
अतडु, वाडु ।	वह ।
ओमँ ।	वह ।
अदि ।	वह ।
वाडु अँवडु ? ✓	वह कौन है ?
अतडु रामुडु ।	वह राम है ।
ओमँ बालिक ।	वह लड़की है ।
अदि चँट्टु ।	वह पेड़ है ।
अदि अल्लु ।	वह घर है ।
अदि मंचि पनि ।	यह अच्छा काम है ।
अदि मंचि पुस्तकमु ।	वह अच्छी पुस्तक है ।
अदि अंदमैन पँटुँ ।	यह सुंदर सँदूक है ।
आवयगि बालुडु ।	वह बीमार लड़का है ।
गि बालिक ।	वह बीमार लड़की है ।
रामंतुडैन विद्यार्थि ।	वह होशियार विद्यार्थी है ।

वाडु चातुर्यमु गल व्यापारि ।	वह चतुर सौदागर है ।
वाडु बीद मनुष्युडु ।	वह गरीब आदमी है ।
अतडु धनिकुडेन नायकुडु ।	वह अमीर नेता है ।
अदि पँद अिल्लु ।	वह बड़ा घर है ।
अिदि पँद पाठशाल ।	यह बड़ी पाठशाला है ।
अिदि चिन्न कागितमु ।	यह छोटा कागज है ।
आमँ चिन्न बालिक ।	वह छोटी लड़की है ।
अदि वेडि पालु ।	वह गरम दूध है ।
अिदि चल्लनि नीरु ।	यह ठंडा पानी है ।
अदि चल्लनि तेनीरु ।	वह ठंडी चाय है ।
ओ पनि मंचिदि ।	यह काम अच्छा है ।
आ बालिक बुद्धिमंतं ।	वह लड़की होशियार है ।
आ मनुष्युडु बीद ।	वह आदमी गरीब है ।
ओ कागितमु चिन्नदि ।	यह कागज छोटा है ।
ओ पुस्तकमु मंचिदि ।	यह पुस्तक अच्छी है ।
अिदि विद्यार्थियाँक्क पनि ।	यह विद्यार्थीका काम है ।
अदि अुपाध्यायुल पुस्तकमु ।	वह शिक्षककी पुस्तक है ।
अदि व्यापारि याँक्क अिल्लु ।	वह व्यापारीका घर है ।
अिदि पँदुँ याँक्क ताळमु ।	यह संदूकका ताला है ।
अिदि ताळमु याँक्क बीगमु ।	यह तालेकी चाभी है ।
अिवि मंचि पनुलु ।	ये अच्छे काम हैं ।
अिवि मंचि पुस्तकमुलु ।	ये अच्छी पुस्तकें हैं ।
अिवि अंदमैन पँदुँलु ।	ये सुन्दर संदूक हैं ।
वीरु रोगि वालकुलु ।	ये बीमार लड़के हैं ।
वीरु रोगि वालिकलु ।	ये बीमार लड़कियाँ हैं ।

वारु बुद्धिमंतुलै न विद्यार्थुलु ।	वे होशियार विद्यार्थी हैं ।
वारु चातुर्यमगल व्यापारुलु ।	वे चतुर व्यापारी हैं ।
वीरु बीद मनुष्युलु ।	ये गरीब आदमी हैं ।
वारु धनिकुलै न नायकुलु ।	वे अमीर नेता हैं ।
अवि पँह अिड्लु ।	वे बड़े घर हैं ।
अवि पँह पाठशाललु ।	ये बड़ी पाठशालाएँ हैं ।
अवि चिन्न कागितमुलु ।	वे छोटे कागज हैं ।
ओ अुपाध्यायुलु मंचिवारु ।	ये शिषक अच्छे हैं ।
ओ व्यापारुलु चातुर्यमगलवारु ।	ये व्यापारी चतुर हैं ।
आ बालुरु बुद्धिमंतुलु ।	वे लड़के होशियार हैं ।
ओ कागितमुलु चिन्नवि ।	ये कागज छोटे हैं ।
ओ पुस्तकमुलु मंचिवि ।	ये पुस्तकें अच्छी हैं ।
अवि अुपाध्यायुलयॉक्क पुस्तकमुलु ।	ये शिषककी पुस्तकें हैं ।
अवि व्यापारुलु अिड्लु ॥	ये व्यापारीके घर हैं ।
ओ ताळमुलु पँहयॉक्कवि ।	ये ताले संदूकके हैं ।
ओ बीगमुलु ताळमुनवि ।	ये चाभियाँ तालेकी हैं ।
वारु भारतदेशपु नायकुलु ।	वे भारतके नेता हैं ।

टिप्पणियाँ : १. अन्य पुरुष सर्व नामके तीन भेद हैं : पुरुष, स्त्री और अमहद्वाचक । अतडु या वाडु (वह) पुरुष बोधक है : 'आमँ' स्त्री बोधक है । 'अदि' छोटे शिशु या जानवर, जीव जन्तु अथवा निर्जीव वस्तुओंका बोधक है । अमहद्वाचकको नपुंसक लिंग मानना ठीक नहीं है ।

२. अिन तँलुगु वाक्योंमें क्रियाका प्रयोग नहीं होता है । फिर भी वाक्य अधूरे नहीं हैं ।

पाठ ३ रा

नेनु अुन्नानु ।	में हूँ ।
नीवु अुन्नावु ।	तू है ।
वाडु अुन्नाडु (पुं) ।	वह है ।
आमँ अुन्नदि (स्त्री) ।	”
अदि अुन्नदि (अमहत्) ।	”
वीडु अुन्नाडु (पुं) ।	यह है ।
ओमँ अुन्नदि (स्त्री) ।	”
अिदि अुन्नदि (अमहत्) ।	”
* मेमु अुन्नामु; मनमु अुन्नामु ।	हम हैं ।
मीरु अुन्नारु ।	तुम हो ।
बारु अुन्नारु (पुं-स्त्री) ।	वे हैं ।
अवि अुन्नवि (अमहत्) ।	”
वीरु अुन्नारु (पुं-स्त्री) ।	ये हैं ।
अिवि अुन्नवि (अमहत्) ।	”
तमरु अुन्नारु ।	आप हैं ।
नेनु बालुडु ।	में लड़का हूँ ।
नेनु विद्यार्थि ।	में विद्यार्थी हूँ ।
नेनु वालिक ।	में लड़की हूँ ।

* दक्षिणी भाषाओंमें “हम” के दो रूप हैं । अकमें मध्यम पुरुष सम्मिलित नहीं है (मेमु) दूसरेमें सम्मिलित है (मनमु) ।

नेनु बुद्धिमंतुडु ।	मैं होशियार हूँ ।
नीवु रोगि ।	तू बीमार है ।
अदि पुस्तकमु ।	वह पुस्तक है ।
अिदि अेमि ?	यह क्या है ?
अिदि पाठमु ।	यह पाठ है ।
अिदि पाठशाल ।	यह पाठशाला है ।
मेमु-मनमु विद्यार्थुलु ।	हम विद्यार्थी हैं ।
मेमु-मनमु बुद्धिमंतुलु ।	हम होशियार हैं ।
मेमु-मनमु अिक्कड अुन्नामु ।	हम यहाँ हैं ।
मीरु अँवरु ?	तुम कौन हो ?
मीरु अँक्कड अुन्नारु ?	तुम कहाँ हो ?
मीरु वालुरु ?	तुम लड़के हो ?
मीरु बालिकलु ।	तुम लड़कियाँ हो ।
अवि पुस्तकमुलु ।	वे पुस्तकें हैं ।
वारु अुपाध्यायुलु ।	वे अध्यापक हैं ।
वारु भाषण-कर्तलु ।	वे वक्ता हैं ।
अवि रँण्डु अिड्लु ।	ये दो घर हैं ।
अवि पंड्लु ।	ये फल हैं ।
✓अवि चिन्न कागितमुलु ।	ये छोटे कागज हैं ।
तमरु प्राध्यापकुला ?	आप प्राध्यापक हैं ?
तमरु विद्यार्थुलु ।	आप विद्यार्थी हैं ।
✓तमरु वागुन्नारु ।	आप अच्छे हैं ।
लेदु ।	नहीं ।
वाडु अिक्कड लेदु; (पुं.) आम्- अदि अिक्कड लेदु (स्त्री व अमहत्) ।	} वह यहाँ नहीं है ।

✓ नेनु विद्यार्थि कानु ।
मेमु-मनमु सोमरुलु कामु ।
मीरु रोगि कारु ।
तमरु बीद कारु ।

मैं विद्यार्थी नहीं हूँ ।
हम आलसी नहीं हैं ।
तुम बीमार नहीं हो ।
आप गरीब नहीं हैं ।
यह होशियार नहीं है ।

✓ अितडु बुद्धिमंतुडु काडु (पुं.)
✓ ओमै-बुद्धिमंतै काडु (स्त्री) ।
अिवि अंदमैनवि कावु ।

ये सुन्दर नहीं हैं ।

✓ वारु अिवकड़ लेरु (पुं. व स्त्री.)
✓ अवि अिवकड़ लेवु (अमहत्) ।

} वे यहाँ नहीं हैं ।

टिप्पणी : ध्यान देनेकी बात है कि तेलुगुमें अेकवचनमें स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंगकी क्रियाओंका अंक-सा रूप और बहुवचनमें पुल्लिंग और स्त्रीलिंगकी क्रियाओंका अेकसा रूप होता है ।

पाठ ४ था

नेनु वच्चु चुन्नानु ।
नीवु वच्चुचुन्नावु ।
वाडु वच्चुचुन्नाडु ।
वीडु वच्चुचुन्नाडु ।
मेमु—मनमु वच्चुचुन्नामु ।

मीरु वच्चुचुन्नारु ।

वारु वच्चुचुन्नारु ।

वीरु वच्चुचुन्नारु ।

तमरु वच्चुचुन्नारु ।

नेनु वच्चुचुन्नानु ।

नीवु वच्चुचुन्नावु ।

आमँ वच्चुचुन्नदि ।

ओमँ वच्चुचुन्नदि ।

मेमु—मनमु वच्चुचुन्नामु ।

मीरु वच्चुचुन्नारु ।

वारु वच्चुचुन्नारु ।

वीरु वच्चुचुन्नारु ।

तमरु वच्चुचुन्नारु ।

अदि वच्चुचुन्नदि ।

अिदि वच्चुचुन्नदि ।

अवि वच्चुचुन्नवि ।

अिवि वच्चुचुन्नवि ।

मँ आता हूँ ।

तू आता है ।

वह आता है ।

यह आता है ।

हम आते हैं ।

तुम आते हो ।

वे आते हैं ।

ये आते हैं ।

आप आते हैं ।

मँ आती हूँ ।

तू आती है ।

वह आती है ।

यह आती है ।

हम आती हैं ।

तुम आती हो ।

वे आती हैं ।

ये आती हैं ।

आपआती हैं ।

अमहत् : वह आता है—वह आती है ।

यह आता है—यह आती है ।

वे आते हैं—वे आती हैं ।

ये आते हैं—ये आती हैं ।

सोदरुडु वयट आडुकाँनुचुन्नाडु । भाभी बाहर खेलता है ।
 सोदरि लोपल आडुकाँनुचुन्नदि । बहन भीतर खेलती है ।
 आ बालुडु अमि चैयुचुन्नाडु ? वह बालक क्या करता है ?
 आ विद्यार्थि पुस्तकमु चदुवुचुन्नाडु । वह विद्यार्थी किताब पढ़ता है ।
 अुपाध्यायुलु अमि चैयुचुन्नारु ? अध्यापक क्या करते हैं ?
 वारु हिन्दि नेपुचुन्नारु । वे हिन्दी पढ़ाते हैं ।
 नीवु अेल अेड्चु चुन्नावु ? तू क्यों रोता है ?
 नेनु अेड्व लेदु, नव्वुचुन्नानु । मैं नहीं रोता, हँसता हूँ ।
 मीरु प्रति दिनमु अँत्रि तुम रोज कितने वजे अुठते हो ?
 गंटलकु लेचु चुन्नारु ? यह रोज छः वजे अुठता है ।
 वीडु प्रति दिनमु आरु
 गंटलकु लेचु चुन्नाडु ।
 मेमु-मनमु पदिगंटल हम दस वजेतक काम करते हैं ।
 वरकु पनि चैयुचुन्नामु ।
 मेमु-मनमु अिक्कड वसिचु चुन्नामु । हम यहाँ रहते हैं ।
 मीरु अँक्कड वसिचु चुन्नारु ? तुम कहाँ रहती हो ?
 मीरु हिन्दि नेर्चुकाँण्डि । तुम हिन्दी सीखो ।
 मीरु ओ पाठमु चदुवंडि । तुम यह पाठ पढ़ो ।
 मेमु-मनमु हिन्दि नेर्चुकाँनु चुन्नामु । हम हिन्दी सीखते हैं ।

टिप्पणी : तेलुगुमें अुत्तम और मध्यम पुरुषोंमें क्रियाका रूप लिगके कारण नहीं बदलता ।

Present Centinimus.

पाठ ५ वाँ

नेनु वच्चुचु अन्नानु ।	मैं आ रहा हूँ ।
नीवु वच्चुचु अन्नावु ।	तू आ रहा है ।
वाडु वच्चुचु अन्नाडु ।	वह आ रहा है ।
वीडु वच्चुचु अन्नाडु ।	यह आ रहा है ।
मेमु—मनमु वच्चुचु अन्नामु ।	हम आ रहे हैं ।
मीरु वच्चुचु अन्नारु ।	तुम आ रहे हो ।
वारु वच्चुचु अन्नारु ।	वे आ रहे हैं ।
तमरु वच्चुचु अन्नारु ।	आप आ रहे हैं ।
नेनु वच्चुचु अन्नानु ।	मैं आ रही हूँ ।
नीवु वच्चुचु अन्नावु ।	तू आ रही है ।
आमँ वच्चुचु अन्नदि ।	वह आ रही है ।
ओमँ वच्चुचु अन्नदि ।	यह आ रही है ।
मेमु—मनमु वच्चुचु अन्नामु ।	हम आ रही हैं ।
मीरु वच्चुचु अन्नारु ।	तुम आ रही हो ।
वारु वच्चुचु अन्नारु ।	वे आ रही हैं ।
वीरु वच्चुचु अन्नारु ।	ये आ रही हैं ।
तमरु वच्चुचु अन्नारु ।	आप आ रही हैं ।
अदि वच्चुचु अन्नदि (अमहत्) ।	वह आ रहा है—वह आ रही है ।
अदि वच्चुचु अन्नदि ।	यह आ रहा है—यह आ रही है ।
अवि वच्चुचु अन्नवि ।	वे आ रहे हैं—वे आ रही हैं ।
अवि वच्चुचु अन्नवि ।	ये आ रहे हैं—ये आ रही हैं ।
मीरु अँन्दुकु परुगिडुचु अन्नारु ?	तुम क्यों दौड़ रहे हो ?
पिल्लि पालु त्रागुचु अन्नदि ।	बिल्ली दूध पी रही है ।

✓ चाडु बंडि तोलुचु अन्नाडु । वह गाड़ी चला रहा है ।
 ✓ अँवर पिलुचुचु अन्नार ? कौन बुला रहा है ?
 तमर अँकड पोवुचु अन्नार ? आप कहाँ जा रहे हैं ?
 बालिक नव्वुचु अन्नदि । लड़की हँस रही है ।
 मेम-मनम हिन्दी चदुवुचु अन्नाम । हम हिन्दी सीख रही हैं ।
 ✓ वाडु अिटु अटु तिरुगुचु अन्नाडु । वह अधर अधर घूम रहा है ।
 नेनु वयट पोवचु अन्नानु । मैं बाहर जा रही हूँ ।
 अुपाध्यायुलु पाठमु नर्पुचु अन्नार । अध्यापक पाठ सिखा रहे हैं ।
 व्यापारि धनमु सम्पादिचुचु अन्नाडु । व्यापारी पैसा कमा रहा है ।
 वाडु पँट्टे धरकु तीसिकाँनुचु अन्नाडु । वह संदूक खरीद रहा है ।
 वारु स्नानमु चेयुचु अन्नार । वे नहा रहे हैं ।
 ✓ वीरु तेनीरु त्रागुचु अन्नार । ये चाय पी रहे हैं ।
 भाषण कर्त अुपन्यसिचुचु अन्नाडु । वक्ता भाषण दे रहा है ।
 वाडु पँट्टे याँक्क ताळमु तँरुचुचु अन्नाडु । वह संदूकका ताला खोल रहा है ।
 अी बालुडु पटमु चूचुचुन्नाडु । यह लड़का चित्र देख रहा है ।
 मीरु जावु ब्रायुचु अन्नारा ? क्या आप चिट्ठी लिख रहे हैं ?
 कादंडि, नेनु पाठमु ब्रायुचु अन्नानु । जी नहीं, मैं पाठ लिख रहा हूँ ।
 आमँ कूड ब्रायुचुन्नदि । वह भी लिख रही है ।
 वाडु माटलाडडु ; या माटलाडुट लेदु । वह नहीं बोलता ।
 वीडु माटलाडु चुंड लेदु । यह नहीं बोल रहा है ।
 नेनु पोनु या पोवुट लेदु । मैं नहीं जाती ।
 नेनु आटलाडु चुंड लेदु । मैं नहीं खेल रही हूँ ।
 वारु तेनीरु त्रागरु या त्रागुट लेदु । वे चाय नहीं पीते ।

टिप्पणी : तँलुगुमें वस्तुतः सामान्य वर्तमान और तात्कालिक वर्तमानके रूप अँकसे ही हैं ।

Kulira Tenge .

पाठ ६ वाँ

नेनु वच्चुदुनु ।	में आअूंगा ।
नीवु वच्चुदुवु ।	तू आअेगा ।
वाडु वच्चुनु ।	वह आअेगा ।
वीडु वच्चुनु ।	यह आअेगा ।
मेमु-मनमु वच्चुदुमु ।	हम आअेंगे ।
मीरु वच्चुदुरु ।	तुम आओगे ।
वारु वच्चुदुरु ।	वे आअेंगे ।
वीरु वच्चुदुरु ।	ये आअेंगे ।
तमरु वच्चुदुरु ।	आप आअेंगे ।
नेनु वच्चुदुनु ।	में आअूंगी ।
नीवु वच्चुदुवु ।	तू आअेगी ।
आमँ वच्चुनु ।	वह आअेगी ।
आमँ वच्चुनु ।	यह आअेगी ।
मेमु-मनमु वच्चुदुमु ।	हम आअेंगी ।
मीरु वच्चुदुरु ।	तुम आओगी ।
वारु वच्चुदुरु ।	वे आअेंगी ।
वीरु वच्चुदुरु ।	ये आअेंगी ।
तमरु वच्चुदुरु ।	आप आअेंगी ।
अदि वच्चुनु (अमहत्) ।	वह आअेगा-आअेगी ।
अिदि वच्चुनु ।	यह आअेगा-आअेगी ।
अवि वच्चुनु ।	वे आअेंगे-आअेंगी ।
अिदि वच्चुनु ।	ये आअेंगे-आअेंगी ।
मीरु ओ रोजु अँक्कड पोवुदुरु ?	तुम आज कहाँ जाओगे ?

नेनु रेपु तप्पक पोवुदुनु । मीरु ऐमि ऐमि तिंदुरु ? नेनु पप्पु अन्नं गोधुम-राट्टं तिंदुनु । तमरु बयट बच्चंदरा ? नेनु वस्त्रमु कांदुनु । ओ चिन्न बालुडु ऐमि तिननु ? वाडु ऐमियु तिनडु । मीरु रेंडु रूपायलु अच्चंदरा ? लेदंडि नेनु अिव्वनु । मेमु-मनमु चित्रमु चूचुदुमु । मीरु वच्चंदरा, चूचंदरा ? नेनु पाठमु रेपु चदुवुदुनु । नेनु पाठमु रेपु नेर्पुदुनु । वाडु पदि गंटलकु निद्रपोवुनु । नेनु अिव्वकड अंडनु । मेमु-मनमु पाट पाडुदुमु । नेनु नायकुडु अगुदुनु । मेमु-मनमु भाषण कर्तलु अगुदुमु । मीरु अुपाध्यायलु अगुदुरु । वारु कूड अुपाध्यायलु अगुदुरु । मीरु मामिडि पंडु तीसिकानंदरा ? मेमु-मनमु कूड तीसिकोमु । वारु अिव्वकड रारु ।	मैं कल जरूर जाऊंगा । तुम क्या क्या खाओगे ? मैं दाल भात, गेहूँकी रोटी खाऊंगा । आप बाहर चलेंगे ? मैं कपड़ा खरीदूंगा । यह छोटा बालक क्या खायेगा ? वह कुछ नहीं खायेगा । आप दो रुपये देंगे ? जी नहीं, मैं नहीं दूंगा । हम चित्र देखेंगे । तुम चलोगे और देखोगे ? मैं पाठ कल पढ़ूंगी । मैं पाठ कल सिखाऊंगा । वह दस बजे सोयेगा । मैं यहाँ नहीं रहूँगा । हम गाना गाएँगे । मैं नेता बनूँगा । हम वक्ता बनेँगे । तुम अध्यापक बनोगे । वे भी अध्यापक बनेँगे । तुम आम लोगी ? हम भी नहीं लेंगी । वे यहाँ नहीं आएँगी ।
---	--

पाठ ७ वाँ *Past Continuing* [अडव पाठमु]

नेनु वच्चुचुंटिनि ।	मैं आ रहा था ।
नीवु वच्चुचुंटिवि ।	तू आ रहा था ।
वाडु वच्चुचुंडेंनु ।	वह आ रहा था ।
वीडु वच्चुचुंडेंनु ।	यह आ रहा था ।
मेमु—मनमु वच्चुचुंटिमि ।	हम आ रहे थे ।
मीरु वच्चुचुंडिरि ।	तुम आ रहे थे ।
वारु वच्चुचुंडिरि ।	वे आ रहे थे ।
वीरु वच्चुचुंडिरि ।	ये आ रहे थे ।
तमरु वच्चुचुंडिरि ।	आप आ रहे थे ।
नेनु वच्चुचुंटिनि ।	मैं आ रही थी ।
नीवु वच्चुचुंटिवि ।	तू आ रही थी ।
आमैं वच्चुचुंडेंनु ।	वह आ रही थी ।
ओमैं वच्चुचुंडेंनु ।	यह आ रही थी ।
मेमु—मनमु वच्चुचुंटिमि ।	हम आ रही थीं ।
मीरु वच्चुचुंडिरि ।	तुम आ रही थीं ।
वारु वच्चुचुंडिरि ।	वे आ रही थीं ।
वीरु वच्चुचुंडिरि ।	ये आ रही थीं ।
तमरु वच्चुचुंडिरि ।	आप आ रही थीं ।
अदि वच्चुचुंडेंनु (अमहत्) ।	वह आ रहा था—आ रही थी ।
अिदि वच्चुचुंडेंनु ।	यह आ रहा था—आ रही थी ।
भा. भा. तेलुगू—२	

अवि वच्चुचुडेंनु ।
 अवि वच्चुचुडेंनु ।
 तमरु अेमि अडुगुचुडिरि ?
 नेनु आँक प्रश्न अडुगुचुडिनि ।
 वाडु प्रश्न समाधानमु
 चेयुचुडेंनु ।
 दर्जि वस्त्रमुलु कुट्टुचुडेंनु ।
 मीरु वस्त्रमुलु अुतुकुचुडिरि ।
 मेमु कवड्डि आडुचुडिमि ।
 तमरु अँन्नि गंटलकु
 आडुचुडिरि ?
 आमँ अुपन्यासिचुचुडेंनु ।
 नीवु पोवु चुडिवा ?
 ओमँ अेमि तीसिकाँनु चुडेंनु ?
 नेनु हिन्दी नेर्चुकाँनुचुडिनि ।
 वारु अुपन्यासमु विनुचुडिरि ।
 मीरु अेल परिगिडु चुडिरि ?
 तम पनि जरुगुचुडेंनु ।
 वाडु अेमो चँप्पु चुडेंनु ।
 वीरु अेल नव्वुचुडिरि ?
 वारु पुस्तकमु चडुवु चुडिरि ।
 आमँ पुस्तकमु अडुगु चुडेंनु ।
 नेनु नीरु त्रागुचुडिनि ।
 अुपाध्यायुलु प्रश्न अडुगुचुडिरि,
 (मरियु) विद्यार्थुलु
 अुत्तरमिच्चुचुडिरि ।

वे आ रहे थे—आ रही थीं ।
 ये आ रहे थे—आ रही थीं ।
 आप क्या पूछ रही थीं ?
 मैं अेक प्रश्न पूछ रही थी ।
 वह सवाल हल कर रहा था ।
 दर्जी कपड़े सी रहा था ।
 तुम कपड़े धो रहे थे ।
 हम कवड्डी खेल रहे थे ।
 आप कितने बजे खेल रहे थे ?
 वह व्याख्यान दे रही थी ।
 क्या तू जा रहा था ?
 यह क्या ले रही थी ?
 मैं हिन्दी सीख रहा था ।
 वे भाषण सुन रहे थे ।
 तुम क्यों दौड़ रहे थे ?
 आपका काम हो रहा था ।
 वह कुछ कह रहा था ।
 ये क्यों हँस रही थीं ?
 वे पुस्तक पढ़ रही थीं ।
 वह पुस्तक माँग रही थी ।
 मैं पानी पी रही थी ।
 अध्यापक प्रश्न पूछते थे,
 और विद्यार्थी जवाब देते थे ।

बालकुडु बटुलु उतुकुचुंडेनु ।	लड़का कपड़े धोता था ।
(मरियु) बालिक बटुलु	और लड़की कपड़े सीती थी ।
कुट्टुचुंडेनु ।	
नेनु अेमियु चैप्पुचुंडलेदु ।	मैं कुछ नहीं कह रहा था ।
आमँ नव्वुचुंड लेदु ।	वह नहीं हँस रही थी ।
नीवु अक्कड़ लेवु ।	तू वहाँ नहीं था ।
मेमु-मनमु अक्कड़ लेमु ।	हम यहाँ नहीं थे ।
वारु पुस्तकमु चदुवुचुंड लेदु ।	वे पुस्तक नहीं पढ़ती थीं ।
वीरु अपन्यासमु विनुचुंड लेदु ।	ये भाषण नहीं सुनती थीं ।
मीरु माटलाडु चुंड लेदु ।	तुम नहीं बोलते थे ।
तमरु नव्वुचुंड लेदु ।	आप नहीं हँस रहे थे ।

पाठ ८ वाँ

[अंनिमिदव पाठमु]

1	कर्ता	डु. मु. वु. लु	०. ने
2	कर्म	नि. नु.	०. को
3	करण	चेत. तोड़. तो	से
4	सम्प्रदान	काँरकु. कै	को
5	अपादान	वलन. कंटें. पट्टि	से
6	सम्बन्ध	किः कुः याँक्क	का. की. के
7	अधिकरण	अन्दु. लो. मीद. पै.	में. पर
	नेनु तमकु नेपुदुनु ।		मैं आपको पढ़ाऊँगा ।
	वाडु मिम्मलुनु पिलुचुचुन्नाडु ।		वह तुमको बुलाता है ।
	नेनु वारिनि अँरुगुदुनु ।		मैं अनुको जानती हूँ ।
	नेनु कलमुतो ब्रायुचुन्नानु ।		मैं कलमसे लिख रहा हूँ ।
	वाडु कत्तिती कूर		वह चाकूसे तरकारी काटता है ।
	कायलु कोयुचुन्नाडु ।		
	* वारु दाँडगलकु भय पडेंदरु ।		वे चोरोसे डरते हैं ।
	मेमु तमकु पुस्तकमु तप्पक अत्तुमु ।		हम आपको पुस्तक अवश्य देंगे ।
	आमँ गुर्रमुनु पट्टुकाँनुचु अन्नदि ।		वह घोड़ेको पकड़ रही है ।
	मानवुनिकटँ प्रपंचमुलो पेंद अँवरु?		मानवसे दुनियामें बड़ा कौन है?
	काँय्य (करँ) तो अये वस्तु-		लकड़ीसे कौन कौनसी चीजें
	वुलु चयबडुनु ?		बनती हैं ?
	वानिदगगरनंङि नेनु रँण्डु रूपायलु		अससे मुझे दो रुपये लेने हैं ।
	तीसिकोवलनु ।		

* हिन्दीमें 'चोरोसे' अपादान कारक है पर तेलुगुमें 'दाँडगलकु सम्प्रदान कारक है ।

आवु पालु अँक्कड़ दारकुनु ?

अदि चँट्टुयाँक्क आकु ।

अदि गुलाबि माँग ।

अदि गाँट्टुपु नीरु ।

पाठशाल लो विद्यार्थुलु चदिवँदरु ।

नेनु मंचमुपै निदुर पोतानु ।

वाडु कागितमु पै कलमुतो अेमि

ब्रायुचुन्नाडु ?

कंटितो चूडंडि (मरियु)

चँवुलतो विनँडि ।

अिटिलो विव्यमु लेदु ।

✓ पुस्तकमु याँक्क धर अेमि ?

तमकु डब्बु रेपु अित्तुमु ।

तेनीटिकटँ पालु मेलु ।

मनिषिनि अिक्कड़ पिलुवु ।

विद्यार्थिकि अेमि कावलयुनु ?

मनमु कंडलतो चूचंदमु

मरियु चँवुलतो विनँदमु ।

पुस्तकमुल धर अँक्कुव ।

पुष्पमुल सुगन्धि मंचिदि ।

पालुनुचि पँरुगु कलुगु (चेयवडु)

चुन्नदि ।

✓ शक्ति कंटँ बुद्धि श्रेष्ठमैनदि ।

मेमु-मनमु बालुरकु मिठाअि

अित्तुमु ।

नेनु विद्यार्थुलकु नेर्पुदुनु ।

नेनु कूड बालिकलकु नेर्पुदुनु ।

गायका दूध कहाँ मिलेगा ?

यह पेड़का पत्ता है ।

वह गुलाबकी कली है ।

यह नलका पानी है ।

पाठशालामें विद्यार्थी पढ़ते हैं ।

मैं चारपायीपर सोता हूँ ।

वह कागजपर कलमसे क्या लिख

रहा है ?

आँखसे देखो और कानसे सुनो ।

घरमें चावल नहीं है ।

पुस्तकका दाम क्या है ?

आपको पैसा कल देंगे ।

चायसे दूध अच्छा ।

आदमीको यहाँ बुलाओ ।

विद्यार्थीको क्या चाहिए ?

हम आँखोंसे देखते हैं

और कानोंसे सुनते हैं ।

पुस्तकोंका दाम अधिक है ।

फूलोंकी सुगन्धि अच्छी है ।

दूधसे दही बनता है ।

शक्तिसे बुद्धि श्रेष्ठ है ।

हम लड़कोंको मिठाई देंगे ।

मैं विद्यार्थियोंको पढ़ाऊँगा ।

मैं भी लड़कियोंको पढ़ाऊँगी ।

मीरु नेडु अध्ययनमु चेसितिरा ? तुमने आज अध्ययन किया ?
 तमरु कथ विन्नारा ? आपने कहानी सुनी ?
 गुरुवुगारु रण्डु पाठमुलु नेप्पिरि । गुरुजीने दो पाठ पढ़ाये ।
 वाडु नालुगु लड्डुलु तिननु । उसने चार लड्डू खाये ।
 वीडु हिन्दी लो कवित ब्रासनु । अिसने हिन्दीमें कविता लिखी ।
 नेनु चन्नोर त्रागिनानु । मैंने ठंडा पानी पिया ।

टिप्पणियाँ : तल्लुगु कर्तृवाचक चिन्ह केवल संज्ञाओंके अन्तिम अवपर सूचित करते हैं । 'ने' जैसे विशेष कारक चिन्ह नहीं हैं ।

कर्म कारक चिन्ह : कुछ शब्दोंके साथ नि जुड़ता है, कुछ के साथ नु :
 रामुनि-रामको; सीतनु-सीताको; करण कारक 'चेत' साधन सूचित करता है । 'तोड' और 'तो' दोनों समानार्थक हैं । ये साधनके अलावा "साथ" सा अर्थ भी सूचित करते हैं : रामसे बोलो-रामुनितो माटलाडु ।

सम्प्रदान : 'कि' या 'कु' 'को' के अर्थमें और कॉरकु 'के लिये' के अर्थमें आते हैं ।

अपादान : से के तीन अर्थ हैं : कारण सूचक से का 'वलन', तुलनात्मक अर्थमें 'कट' और अुद्गमस्यान बोधक अर्थमें 'नुडि' 'यानुचि' है ।

यॉक्क सम्बन्ध कारक चिन्ह है । 'का' जैसे वादकी संज्ञाके लिये वचनके कारण बदलता है वैसे यह नहीं बदलता । पर बहुधा यह लुप्त रहता है । 'रामुनि यॉक्क' को केवल 'रामुनि' कहना पर्याप्त है ।

'में' के अर्थमें 'लो' या 'लोपल' का प्रयोग होता है और 'पर' के अर्थमें 'मीद' का ।

सम्प्रदान कारकमें कि या कु चिन्ह लगाया जाता है : रामुनिकि ओ (रामको दे) सीतकु ओ (सीताको दे) यही 'कि' या 'कु' सम्बन्ध कारकमें आता है : रामुनिकि रण्डु सोदरीलु (रामके दो बहनें हैं) सीतकु रण्डु सोदरीलु (सीताके दो बहनें हैं) आदि । जहाँ हिन्दीमें "का" या उसका परिवर्तित की या के लगाना पड़ता है वहीं तल्लुगुमें "यॉक्क" लगाना पड़ता है । बहुधा यह "यॉक्क" लुप्त भी रह सकता है । रामुनि यॉक्क सोदरि या रामुनि सोदरि ।

पाठ ९ वाँ

[तौम्मिदव पाठम्]

नेनु वच्चित्तिनि ।	मैं आया ।
नीवु वच्चित्तिवि ।	तू आया ।
वाडु वच्चिनाडु ।	वह आया ।
वीडु वच्चिनाडु ।	यह आया ।
मेमु-मनमु वच्चित्तिमि ।	हम आये ।
मीरु वच्चित्तिरि ।	तुम आये ।
वारु वच्चिनारु ।	वे आये ।
वीरु वच्चिनारु ।	ये आये ।
तमरु वच्चित्तिरि ।	आप आये ।
नेनु वच्चित्तिनि ।	मैं आओ ।
नीवु वच्चित्तिवि ।	तू आओ ।
आमँ वच्चिनदि ।	वह आओ ।
ओमँ वच्चिनदि ।	यह आओ ।
मेमु-मनमु वच्चित्तिमि ।	हम आओ ।
मीरु वच्चित्तिरि ।	तुम आओ ।
वारु वच्चिनारु ।	वे आओ ।
वीरु वच्चिनारु ।	ये आओ ।
तमरु वच्चित्तिरि ।	आप आओ ।
अदि वच्चिनदि (अमहत्)	वह आया—आओ
अिदि वच्चिनदि	यह आया—आओ
अवि वच्चिनवि	वे आये—आओ
अिवि वच्चिनवि	ये आये—आओ

नेनु आँक मामिडि पंडु तिटिनि । मैंने अेक आम खाया ।
 नेनु रेंण्डु मामिडि पंड्लु तिटिनि । मैंने दो आम खाअे ।
 नेनु आँक राँट्टु तिटिनि । मैंने अेक रोटी खाओी ।
 नेनु मूडु राँट्टुलु तिटिनि । मैंने तीन रोटियाँ खाओीं ।
 मेमु—मनमु आँक
 कागितमु तीसिकाँण्टिमि । हमने अेक कागज लिया ।
 मेमु—मनमु अिरुवदि
 कागितमुलु तीसिकाँण्टिमि । हमने बीस कागज लिअे ।
 मेमु—मनमु आँक
 पुस्तकमु तीसिकाँण्टिमि । हमने अेक पुस्तक ली ।
 मेमु—मनमु पलु
 पुस्तकमुलु तीसिकाँण्टिमि । हमने बहुत पुस्तकें लीं ।
 तमरु पनि चेसितिरा ? क्या आपने काम किया ?
 तमरु पनुलु चेसितिरा ? क्या आपने काम किअे ?
 तमरु पाँरवाटु चेसितिरा ? क्या आपने गलती की ?
 तमरु पाँरवाटुलु चेसितिरा ? क्या आपने गलतियाँ कीं ?
 तमरु नेडु(ओी रोजु) अँन्नि
 गंटलकु लेचितिरि ? आप आज कितने बजे अुठे ?
 नेनु नेडु नालुगु गंटलकु लेचितिनि । मैं आज चार बजे अुठा ।
 नेनु आँक व्यासमु ब्रासितिनि । मैंने अेक लेख लिखा ।
 नेनु कूड अँक कथ ब्रासितिनि । मैंने भी अेक कहानी लिखी ।
 तमरु अेमि चेसितिरि ? आपने क्या किया ?
 मेमु—मनमु रेंण्डु पाठमुलु
 चदिवितिमि । हमने दो पाठ पढ़े ।
 मीरु अँन्नि पाठमुलु चदिवितिरि ? तुमने कितने पाठ पढ़े ?
 नेनु चाल आलोचिचितिनि । मैंने बहुत विचार किया ।

मेमुकूड़ बागुग आलोचिचितिमि । हमने भी खूब सोचा ।
 वाडु चाल पॉरवाटुलु चेसिनाडु ।¹ अउसने बहुत गलतियाँ कीं ।
 वारु विद्यार्थुलतो चर्चचेसिरि । अन्होंने विद्यार्थियोंसे चर्चाकी ।
 नेनु अेमियु चॅप्प लेदु । मैंने कुछ नहीं कहा ।
 बालिक आँक गिन्नॅ तेनीरु त्रागॅनु । लड़कीने अेक कप चाय पी ।
 बालुडु नालुगु गिन्नॅलु पालु त्रागॅनु । लड़केने चार कप दूध पिया ।
 मेमु-मनमु आरु अरटि पंड्लु तिन्नामु । हमने छह केले खाअे ।
 वाडु आँक गडियारमु कॉनॅनु ।² अउसने अेक घड़ी खरीदी ।
 आवु दूडनु तन्नॅनु । गायने बछड़ेको लात मारी ।
 मीरु नेटि समाचारमु विटिरा ? तुमने आजकी खबर सुनी ?
 तमरु नेटि समाचारमुलु विन्नारा ? आपने आजकी खबरें सुनीं ?
 तमरु पत्रिक चदुव लेदा ? क्या आपने अखबार नहीं पढ़ा ?
 तुपाकि ध्वनिवल्ल पक्किष अॅगिरॅनु । बन्दूककी आवाजसे पंछी अुड़े ।
 आमॅ निन्न अिक्कड निदुर पो लेदु । वह कल यहाँ नहीं सोई ।
 नेनु रेपु अक्कड निदुर पोअुदुनु । मैं कल वहाँ सोअूंगी ।
 पिल्लि वच्चॅनु अॅलुक परुगॅत्तॅनु । बिल्ली आअी और चूहे भागे ।
 अिदि अॅवरु वच्चिरि ? ये कौन आअे ?
 वारु बयट पोयारु । वे तो बाहर गअे ।
 अीचित्रमुकादुआ चित्रमुनु चूडंडि । यह चित्र नहीं, वह चित्र देखो ।
 नेनु तम पुस्तकमुनु अी मैंने आपकी पुस्तक
 अलमारिलो पॅट्टितिनि । अिस अलमारीमें रखी ।
 तमरु आ अलमारिलो अेमि आपने अुस अलमारीमें क्या रखा ?
 अुंचितिरि ?
 मीरु अी बालुरनु चूडंडि । तुम अिन लड़कोंको देखो ।

अँवरि पनि कालेदु ?	किसका काम नहीं हुआ ?
तमरु अँवरि पेरु ब्रासिनारु ?	आपने किनका नाम लिखा ?
अे पत्रमुनु निन्न प्रतीक्षिचु चुंदिमो; ३	जिस पत्रकी कल राह देखी;
आ पत्रमु नेडु दारिकँनु ।	वह पत्र आज मिला ।
अे विद्यार्थुलतो निन्न चर्च जरिगँनो;	जिन विद्यार्थियोंसे कल चर्चा हुओ;
वारु नेडु रा लेदु ।	वे आज नहीं आओ ।

टिप्पणियाँ: १. यदि यहाँ “अुसने” किसी स्त्रीका बोध करे तो “आमँ” चाल पाँरवाटुलु चेसिनदि ” होगा ।

२. यदि यहाँ “अुसने” किसी स्त्रीका बोध करे तो “वाडु” के बदले “आमँ” होगा ।

३. जिस वाक्यांशका कर्ता हिन्दीमें अुत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष या अन्य पुरुष अेकवचन या बहुवचन हो सकता है । क्रियाका रूप अेक-सा रहेगा । पर तँलुगुमें क्रियाका रूप कर्ताके अनुसार बदलेगा—यहाँ “हम” कर्ता माना गया है ।

ध्यान रहे कि जहाँ हिन्दीमें कर्ताके साथ ‘ने’ लगाया जाता है वहाँ तँलुगुमें कोअी चिन्ह नहीं लगाया जाता । क्रियाका रूप भी सदा कर्ताके लिंग वचनके अनुसार होता है ।

पाठ १० वाँ

[पदियव पाठमु]

नेनु—(कारक चिन्ह लगानेपर) “ना” (केवल कर्म कारकमें) “न” मै—(कारक चिन्ह लगानेपर) “मुझ”

नेनु—(कर्तृ कारकमें कभी कोअी चिन्ह नहीं लगता) मैंने

नन्नु मुझको, मुझे

नाचेत—नातो मुझसे

नाकु—नाकारकु मुझको

नावलन, नाकंटं, ना (दगगर) नुंडि* मुझसे

ना } मेरा—मेरी,
नायाँक्क }

नाकु मेरे

नायन्दु, नालो मुझमें

ना पै, नामीद मुझपर

नीवु—(कारक चिन्ह लगानेपर) “नी” तू कारक चिन्ह लगानेपर “तुझ”
(केवल कर्म कारकमें) “नि”

नीवु—(कर्तृ कारकमें कभी कोअी चिन्ह नहीं लगता) तूने

निन्नु तुझको, तुझे

नीचेत, नीतो तुझसे

* मुझसे अक रुपया लो—यहाँ ‘से’ का ठीक तँलुगु शब्द ‘नुंचि’ या ‘नुंडि’ है; पर प्रयोगमें अक्सर ‘दगगर नुंडि’—पाससे—ही प्रयुक्त होता है। वैसे ही हमसे का ‘मा दगगर नुंडि’ और तुमसेका ‘मी दगगर नुंडि’ होता है।

नीकु, नी काँरकु	तुझको
नीवलन, नीकटँ, नी (दग्गर) नुँडि	तुझसे
नी, नीयाँक्क	तेरा, तेरी
नीकु	तेरे
नीयन्दु-नीलो	तुझमें
नी पै, नी मीद	तुझपर
मेमु-मनमु	हम
मेमु-मनमु	हमने
मम्मु-मम्मुलनु, मनलनु	हमको, हमें
माचेत-मातो-मनचेत, मनतो	हमसे
माकु-माकाँरकु; मनकु-मन काँरकु	हमको
मावलन: माकटँ, मा नुँडि	हमसे
मनवलन, मनकटँ, मननुँडि	
मा-मायाँक्क; मन,	हमारा, हमारी
मनयाँक्क,	
माकु, मनकु	हमारे
मायंदु-मालो; }	हममें
मनयंदु-मनलो; }	
मा पै-मामीद; }	हमपर
मन पै-मन मीद; }	
मीरु	तुम
मीरु	तुमने
मिम्मुलनु	तुमको, तुम्हें
मीचेत, मीतो	तुमसे
मीकु-मी काँरकु	तुमको
मी वलन, मीकटँ, मीनुँडि	तुमसे

मी-मीयाँक्क	तुम्हारा, तुम्हारी
मीकु	तुम्हारे
मीयंदु, मीलो	तुममें
मी पै, मी मीद	तुमपर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	अमहत्	
अितडु, वीडु	ओमँ	अिदि	यह
अितनि, वीनि	—	दीनि	अिस
अितडु, वीडु	ओमँ	अिदि	अिसने
अितनिनि, वीनिनि	ओमँनु	दीनिनि	अिसको, अिसे
अितनिचेत, वीनिचेत	ओमँचेत	दीनिचेत	} अिससे
अितनि तो, वीनितो	ओमँतो	दीनितो	
अितनिकि-वीनिकि	ओमँकु	दीनिकि	} अिसको
अितनि काँरकु-वीनि काँरकु	ओमँ काँरकु	दीनिकाँरकु	
अितनिवलन	ओमँ वलन	दीनि वलन	} अिससे
अितनिकटँ	ओमँ कटँ	दीनि कटँ	
अितनिनुंडि	ओमँनुंडि	दीनि नुंडि	
अितनि याँक्क- वीनि याँक्क	ओमँ याँक्क	दीनियाँक्क	} अिसका, अिसकी, अिसके,
अितनिकि-वीनिकि	ओमँकु	दीनिकि	
अितनियंदु-वीनियंदु	ओमँयंदु	दीनियंदु	} अिसमें,
अितनि लो-वीनिलो	ओमँ लो	दीनिलो	
अितनी पै-वीनि पै	ओमँ पै	दीनिपै	} अिस पर
अितनि मीद-वीनि मीद	ओमँ मीद	दीनिमीद	

पुर्तिलग	स्त्रीलिंग	अमहत्	
१ अतडु-वाडु	आमँ	अदि	वह
अतनि-वानि	—	दानि	अुस
अतडु-वाडु	आमँ	अदि	अुसने
२ अतनिनि-वानिनि	आमँनु	दानिनि	अुसको-अुसे
३ अतनिचेत-वानिचेत	आमँचेत	दानिचेत	अुससे
४ अतनितो-वानितो	आमँतो	दानितो	
५ अतनिकि-वानिकि	आमँकु	दानिकि	
अतनि काँरकु-वानि काँरकु	आमँ काँरकु	दानिकाँरकु	अुसको
अतनिवलन	आमँवलन	दानिवलन	
अतनि कंटँ	आमँ कंटँ	दानिकंटँ	अुससे
अतनि नुंडि	आमँ नुंडि	दानि नुंडि	
अतनियाँक्क-वानि यॉक्क	आमँ यॉक्क	दानियाँक्क	अुसका, अुसकी
अतनिकि-वानिकि	आमँकु	दानिकि	अुसके
अतनियंदु-वानियंदु	आमँयंदु	दानियंदु	
अतनिलो-वानिलो	आमँलो	दानि लो	अुसमें,
अतनि पै-वानि पै	आमँ पै	दानि पै	
अतनि मीद-वानि मीद	आमँ मीद	दानि मीद	अुसपर

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	अमहत्	
वारु	वारु	अवि.	वे
वारि	वारि	वानि	अुन
वारु	वारु	अवि	अुन्होंने
वारिनि	वारिनि	वानिनि.	अुनको-अुन्हें
वारिचेत	वारिचेत	वानिचेत	अुनसे
वारितो	वारितो	वानितो	
वारिकि	वारिकि	वानिकि	अुनको
वारिकाँरकु	वारिकाँरकु	वानिकाँरकु	
वारि-	वारि,	वानि-	अुनका-अुनकी
वारियाँक्क	वारियाँक्क	वानियाँक्क	
वारिकि	वारिकि	वानिकि	अुनके
वारियंदु-	वारियंदु-	वानियंदु-	अुनमें
वारिलो	वारिलो	वानिलो	
वारिपै-	वारिपै-	वानिपै-	अुनपर
वारिमीद	वारिमीद	वानिमीद	
अँवडु	अँवतँ	अँदि	कौन-जो (अेकवचन)
अँवनि	अँवतँ	देनि	किस-जिस
अँवडु	अँवतँ	अँदि	किसने-जिसने
अँवनिनि	अँवतँनु	देनिनि	जिसको, जिसे किसको, किसे ;
अँवनि चेत	अँवतँ चेत	देनिचेत	किससे-जिससे
अँवनि तो	अँवतँ तो	देनितो	
अँवनिकि	अँवतँकु	देनिकि	किसको-जिसको
अँवनि काँरकु	अँवतँ काँरकु	देनिकाँरकु	

पुल्लिग	स्त्रीलिग	अमहत्	
अँवनिवलन } अँवनिकटँ } अँवनि नुंडि }	अँवतँ वलन } अँवतँ कटँ } अँवतँ नुंडि }	देनिवलन } देनिकटँ } देनिनुंडि }	किससे-जिससे
अँवनि याँक्क	अँवतँ याँक्क	देनियाँक्क	{ किसका-की जिसका-की
अँवनिकि	अँवतँकु	देनिकि	किसके-जिसके
अँवनियंदु	अँवतँयंदु	देनियंदु,	किसमें,
अँवनिलो	अँवतँ लो	देनिलो	जिसमें,
अँवनिमीद	अँवतँमीद	देनिमीद	किसपर
अँवनिपै	अँवतँ पै	देनि पै,	जिसपर
✓ अँवरु	अँवरु	अँवि	{ कौन, जो (बहुवचन)
अँवरि	अँवरि	वेनि	किन, जिन
अँवरु	अँवरु	अँवि	किन्होंने, जिन्होंने
अँवरिनि	अँवरिनि.	वेनिनि	{ किनको, किन्हें जिनको, जिन्हें
अँवरिचेत } अँवरितो }	अँवरिचेत } अँवरितो }	वेनिचेत } वेनितो }	किनसे, जिनसे
अँवरिकि } अँवरिकाँरकु }	अँवरिकि } अँवरिकाँरकु }	वेनिकि } वेनिकाँरकु }	किनको जिनको
अँवरिवलन } अँवरिकटँ- } अँवरिनुंडि }	अँवरिवलन } अँवरिकटँ- } अँवरिनुंडि }	वेनिवलन } वेनिकटँ } वेनिनुंडि }	किनसे, जिनसे
अँवरि- } अँवरियाँक्क }	अँवरि- } अँवरियाँक्क }	वेनि- } वेनियाँक्क }	किनका-किनकी जिनका-जिनकी
अँवरिकि	अँवरिकि	वेनिकि	किनके-जिनके

अँवरि यंदु	}	अँवरि यंदु	}	वेनियंदु	}	किनमें
अँवरिलो	}	अँवरिलो	}	वेनिलो	}	जिनमें
अँवरि मीद	}	अँवरि मीद	}	वेनिमीद	}	किनपर
अँवरिपै	}	अँवरिपै	}	वेनिपै	}	जिनपर

वाडु (आमँ) गदि खाली
चेसिनाडु । (चेसिनदि) ^१

अुसने कमरा खाली किया ।

नेनु ओ रोजु बागुगा
वस्त्रमुलु अुतुकितिनि ।

मैने आज खूब कपड़े धोअे ।

मा (मन) तरगतिलो
अिरुबैयैदु विद्यार्थुलुन्नारु ।

हमारे वर्गमें पचीस विद्यार्थी हैं ।

नाकु वानितो (आमँतो-दानितो)
अे सम्बंधमुनु लेदु । ^१

मेरा अुससे कोओ सम्बन्ध नहीं है ।

वाडु (आमँ-अदि) नातो
अेमो अन्नाडु (अन्नदि) ^१

अुसने मुझसे कुछ कहा था ।

वारि पै वंद रूपायल अप्पु अुंडुनु ।

अुनपर सौ रुपअे कर्ज होगा ।

ना (अे) पनि (अुडँतो)
(अदि) अयिनदि । ^२

मेरा जो काम था वह हुआ ।

वाडु (आमँ-अदि) वारि पुस्तकमु
तीसिकाँन्नाडु । (तीसिकाँन्नदि) ^१

अुसने अुनकी पुस्तक ली ।

तमरु अँवरँवरिनि पम्पुचुन्नारु । ^३

आप किस किसको भेज रहे हैं ?

वारु अुपन्यासमुलो
चँप्पिनदि अेमनगा,

अुन्होंने भाषणमें कहा, कि

भारतीय भाषलु नेर्चुकाँनुट
सुलभमु ।

भारतीय भाषाअें सीखना सरल है ।

मी सोदरुलु नन्नु संधिचिरि । ^४

आपके भाओी मुझसे मिले थे ।

भा. भा. तेलुगू—३

वारिचेत सहायमु
 कलुगुननु नम्मकमु माकु कद्दु।^५ अनुसे हमें मददकी आशा है ।
 मिम्मु अक्कड़ अँवरु पिलिचिनदि ? तुम्हें यहाँ किसने बुलाया ?
 आ बालिकनु नेनु गुतिचुको लेनु । अुस लड़कीको मैं नहीं पहचानता ।
 वाडु वानिनि (आमँनु-दानिनि) अरुगुनु^१ वह अुसे जानता है
 अँवरिनि गुसँचि मीरु चँप्पिरो जिनके बारेमें आपने कहा
 वीडु वारि बालुडु । उनका यह लड़का है

टिप्पणियाँ : १. अिन वाक्योंके “अुस” पँल्लिग, स्त्रीलिंग या नपुंसक लिंगके हो सकते हैं । लिंगके अनुसार तँलुगुमें विभिन्न रूप होंगे ।

२. तँलुगुमें सम्बन्ध वाचक सर्वनामका प्रयोग बहुत कम चलता है । “मेरा जो काम था वह हुआ” का “मेरा काम हुआ” रूप ही प्रचलित है । ‘जो’ ‘था’ और ‘वह’ के तँलुगु शब्द कोष्ठकमें हैं ।

३. अिस वाक्यमें “किसको” का कर्म कारक अर्थ दिया है । यदि सम्प्रदान कारक हो तो तँलुगु वाक्यमें “अँवरँवरिकि” होगा ।

४. ‘मुझसे मिले’ ‘से’ में करण कारक चिन्ह है पर तँलुगुमें कर्म कारक चिन्ह लगता है ।

५. हिन्दीमें “मदद” संज्ञा है; तँलुगुमें मददकी आशा नहीं चलता । “मदद मिलेगी अँसी आशा” चलता है ।

तँलुगुमें ‘जो’ का प्रयोग कम चलता है । जहाँ चलता है तहाँ अंग्रेजीके समान प्रश्न वाचक और सम्बन्ध वाचक अेक ही समान हैं ।

पाठ ११ वाँ

[पदकाण्डव पाठमु]

क्रिन्द	के नीचे
पै-मीद	के अूपर
बयट	के बाहर
वॅनुक	के पीछे
तरुवात	के बाद
वॅण्ट, कूड़	के साथ
प्रकारमु	के अनुसार
मुंदु	के पहले-पूर्व
गुंड़ा	के द्वारा-जरिअे
कारणमुवल्ल	के कारण-मारे
लोपल	के अंदर-भीतर
मुंदु	के आगे-सामने
दग्गर	के पास-निकट
तप्प	के अलावा-सिवाय
काकुंड	के बिना
समीपमुन-दग्गर	के नजदीक
काँरकु	के वास्ते-के लिअे
कारणमुवल्ल	की वजह
कंटें	की अपेक्षा
वल्लें	की तरह-भाँति
वैपुन	की ओर-तरफ

अेलननगा, अँन्दुकनगा	क्योंकि
काबटिट-अंदुवलन	अिसलिअे-अतअेव
नीवु राकु ।	तू मत आ ।
नीवु तिनकु ।	तू न खा ।
मीरु पाड़कंडि ।	तुम मत गाओ ।
मीरु तिसिकोकंडि ।	तुम मत लो ।
वाडु चँप्पनारंभिचँनु ।	वह कहने लगा ।
वाडु-अदि	वह भागने लगा ।
परुगिडनारंभिचँनु ।	
ब्रासि अिच्चिरि ^१	लिखकर दिया ।
ब्रासि अिच्चिवेसिनारु ^१	लिखकर दे दी ।
लेचि	अुठकर-अुठकरके
तिनिन-तिन्न	खाया हुआ
अिच्चिन	दी हुआ
पोवुचुन्न	चलती हुआ-चलती
पोवुचुन्न बंडि	चलती गाड़ी
ब्रासिन जावु	लिखी चिट्ठी
आडुटकु पोयँनु । ^१	खेलने गया ।
नेर्चुकाँनुटकु पोयँनु ।	सीखने गयी ।
नेर्चुको वलँनु ।	सीखना चाहिअे ।
मरिचि पो वलँनु ।	भूलना चाहिअे ।
अतडु वच्चुचुंडुनु ।	वह आता होगा ।
आमँ आडुचुंडुनु ।	वह खेलती होगी ।

माटलाडु (विशेषण) माटलाडु वाडु (संज्ञा)	बोलनेवाला
पोवु बंडि	जानेवाली गाड़ी ।
वच्चुचुंडगा	आते-आते
तम दग्गर गडियारमु अंडेंना ?	क्या आपके पास घड़ी थी ?
अवुनंडि, ना दग्गर गडियारमुलु अंडिनवि ।	जी हाँ, मेरे पास घड़ियाँ थीं ।
मेमु-मनमु आ चॅट्टु क्रिद कूर्चान्दुमु ।	हम उस पेड़के नीचे बैठेंगे ।
वाडु अिटिकि बयट निलबडि अुडुनु ।	वह घरके बाहर खड़ा रहेगा ।
वारिलो जगडमु कलिगॅनु ।	अुनके बीच लड़ाही हुआ ।
तम दग्गर अिदि तप्प अे अे वस्तुवुलु अुन्नवि ?	आपके पास अिसके अलावा और क्या क्या चीजें हैं ?
नीवु बाँत्तिगा बिड्डलवल्लं माटलाडुचुन्नावु ।	तुम तो बिलकुल बच्चोंकी तरह बातें करते हो ।
साधु गुडि वैपु तिरिगिरि ।	साधु मंदिरकी तरफ मुड़े ।
बिड्ड तन तल्लि वैपु चूचुचुन्नदि ।	बच्चा अपनी माँकी ओर देख रहा है ।
पाठशालकु वॅनुकटि वैपु ओटल मैदानमु अुन्नदि ।	पाठशालाके पीछेकी ओर खेलका मैदान है ।
नाकु मुंदु अिक्कड अॅवरु वच्चियुंडिरि ?	मेरे पहले यहाँ कौन आया था ?

आ पुस्तकमुनु गुरिचि नेनु ना	अस पुस्तकके बारेमें मैंने अपनी
अभिप्रायमु मुंदे तैलिप अुन्नानु । ^२	राय असिके पूर्व दी है ।
पनि, पूर्ति अगुटकु मुंदु नेनु नीकु	काम समाप्त होनेके पहले मैं
कूलि अिव्व जालनु ।	तुम्हें मजदूरी नहीं दे सकता ।
तेनीरु त्रागुटकटें पालु त्रागुट	चाय पीनेकी अपेक्षा दूध पीना
मेलु ।	अच्छा है ।
तमरु ब्रासिन प्रकारमु अिदुतो ^३	आपके लिखे अनुसार साथमें
पदहेनु कानुल बिळ्ळलु पंपु	पंद्रह पैसेकी टिकट भेज
चुन्नानु ।	रहा हूँ ।
मीरु ना वेंनुकने अेल वच्चुचु	तुम मेरे पीछे पीछे क्यों आरहे
अुन्नारु ?	हो ?
तम ग्राममुनु गुंरुचियैन नगरमुनु	अपने गाँव या शहरके बारेमें
गुंरुचियैन परिचयमु ,	जानकारी
पदि पंक्तुललो ब्रायंडि ।	दस पंक्तियोंमें लिखिओ ।
वारु ना तो माटलैन आडकुंडिरि ।	अुन्होंने मुझसे बाततक नहीं की ।
नेडु नेनु कडुपुनिंडुग भोजनमु	आज मैंने भरपेट भोजन किया ।
चेसितिनि ।	
नीवेमियु माटलाडकु ।	तू कुछ मत बोल ।
नोवु अिटु अटु चूडकु ।	तू अधर अधर मत देख ।
नीवु अक्कड-कूचोकु ।	तू वहाँ मत बैठ ।
मीरु कलमु काँनक्कंडि ।	तुम कलम न खरीदो ।
मीरु अक्कड पोक्कंडि ।	तुम वहाँ न जाओ ।
मीरु अेमियु चेयक्कंडि ।	तुम कुछ मत करो ।

मीरु नेडु स्नानमु चेयकंडि ।	तुम आज मत नहाओ ।
मीरु कूड स्नानमु चेयकंडि ।	तुम भी न नहाओ ।
तमरु अक्कड पोकांडि ।	आप वहाँ न जाओ ।
तमरु तेनीरु त्रागकंडि ।	आप चाय न पीजिओ ।
नेनु अंटिकि पोव कोरुचुन्नानु ।	मैं घर जाना चाहता हूँ ।
ननु अंटिकि तप्पक पोवल्लेनु ।	मुझे घर जाना ही चाहिओ ।
तमकु अेमि कावल्लेनु ?	आपको क्या चाहिओ ?
वारिकि अेमियु वद्धु ।	अुन्हें कुछ नहीं चाहिओ ।
अेमेमि चैप्प वल्लेनो	जो कुछ कहना है अभी कहो ।
अिप्पुडे चैप्पंडि ।	
आमँ अंटिकि पोयि पुस्तकमु	वह घर जाकर किताब लाओगी ।
तीसिकाँनि वच्चुनु ।	
बालुडु पडकुंड तप्पुकाँन्ना-	वह कहने लगा कि लड़का
डनि वाडु चैप्प नारंभिच्चैनु ।*	गिरते गिरते बचा ।
पोवुचुंडगा नेनु वानिनि	जाते जाते मैंने अुसे देखा ।
(आमनु, दानिनि) चूचितिनि ।	
अतडु (आमँ-अदि) कागितमुनु	अुसने कागज फाड़कर फेंक दिया ।
चिपि पार वेसैनु ।	
मेमु रैण्डु मूडु रोजुलु क्रिदट	हम दो चार दिन पहले आपके
मी अंटिकि वच्चितिमि ।	घर आओ थे ।
अयिते तमरु अक्कडो बयट	किन्तु आप कहीं बाहर गओ अुओ थे ।
पोयि अुंडिरि ।	
वाडु नडचुचु अलसि पोयैनु ।	वह चलते-चलते थक गया ।
मनिषि निदुर पोयि अुन्नाडु ।	आदमी सोया अुआ है ।

वाडु अिटिकि पोपोताडु । वह घर जाने वाला है ।
 बागुग पाडे वारु अँवरु ? अच्छा गाने वाला कौन है ?
 आमँ नेडु राबोवु चुन्नदि । वह आज आने वाली है ।
 पाँय्ये बंडिनि पट्टु कौनकंडि । चलती गाड़ीको न पकड़ो ।
 निदुर पोवु वारिनि मेलपकंडि । सोअे हुअेको न जगाओ ।

टिप्पणियाँ : १. अिन दोनों वाक्योंमें कर्ता अन्य पुरुष बहुवचन माना गया है । याद रहे कि तँलुगु की क्रिया सदा कतकि अनुसार होती है ।

२. तँलुगूमँ “राय दी” नहीं “राय प्रकट की” प्रयोग चलता है ।

३. तँलुगुमें केवल “साथमें ” प्रयोग नहीं चलता । “अिसके साथ ” जैसे सर्वनाम या संज्ञाकी आवश्यकता है ।

४. अिस तँलुगु वाक्यकी दो विशेषतायें हैं; ‘ गिरते-गिरते बचा ’ का ‘ नहीं गिरा अैसा बचा ’ रूप है । हिन्दीमें “ वह कहने लगा ” पहले ओर “ लड़का गिरते-गिरते बचा ” बादको है । तँलुगुमें अुलटा है ।

—————

पाठ १२ वाँ

[पंड्रण्डव पाठम्]

नेनु रावच्चुनु (संभाव्य)	}	मैं आअूं
नेनु वच्चुदुनुगाक (प्रार्थना)		
नेनु रावच्चुना (अनुमति सूचक)		
नीवु रावच्चुनु (संभाव्य)	}	तू आअे
नीवु वच्चुदुनुगाक (प्रार्थना)		
नीवु रावच्चुना (अनुमति सूचक)		
वाडु (आमँ-अदि) रावच्चुनु	}	वह आअे
(संभाव्य) वाडु (आमँ-अदि)		
वच्चुनु गाक (प्रार्थना)		
वाडु (आमँ-अदि)		
रावच्चुना (अनुमति सूचक)	}	यह आअे ।
अितडु (ओमँ-अदि) रावच्चुनु		
(संभाव्य) अितडु (ओमँ-अदि)		
वच्चुनु गाक (प्रार्थना)		
अितडु (ओमँ-अदि)		
रावच्चुना (अनुमति सूचक)	}	हम आअें
मेमु (मनम्) रावच्चुनु (संभाव्य)		
मेमु (मनम्) वत्तुमु गाक (प्रार्थना)		
मेमु (मनम्) वत्तुमा ? (अनुमति)		
मीरु रावच्चुनु (संभाव्य)	}	तुम आओ
मीरु वत्तुरु गाक (प्रार्थना)		
मीरु रावच्चुना ? (अनुमति)		

वारु (अवि) रावच्चुनु (संभाव्य) }
 वारु वत्तुरु गाक (प्रार्थत पुं व स्त्री.) } वे आअें
 अवि वच्चुनु गाक (प्रार्थना अमहत्)
 वारु (अवि) रावच्चुना ? (अनुमति) }

वीरु (अवि) रावच्चुनु (संभाव्य) }
 वीरु वत्तुरु गाक (प्रार्थना. पुं. व स्त्री) } ये आअें
 अवि वच्चुनु गाक (प्रार्थना अमहत्)
 वीरु (अवि) रावच्चुना ? (अनुमति) }

तमरु रावच्चुनु (संभाव्य). }
 तमरु वत्तुरु गाक (प्रार्थना) } आप आअें
 तमरु रावच्चुना (अनुमति) }

नेनु वच्चि अुन्नानु-अुंटिनि-अुंदुनु मैं आया हूँ-था-हूँगा
 नीवु वच्चि अुन्नानु-अुंटिवि-अुंदुवु तू आया है-था-होगा
 वाडु वच्चि अुन्नाडु-अुंडेंनु-अुंडुनु (पुं.) वह आया है-था-होगा
 अदि वच्चि अुन्नदि-अुंडेंनु-अुंडुनु (अमहत्)
 वीडु वच्चि अुन्नाडु-अुंडेंनु-अुंडुनु (पुं.) यह आया है-था-होगा
 अिदि वच्चि अुन्नदि-अुंडेंनु-अुंडुनु (अमहत्)
 मेमु-मनमु वच्चि अुन्नामु-अुंटिमि-अुंदुमु हम आअे हैं-थे-होंगे
 मीरु वच्चि अुन्नारु-अुंडिरि-अुंदुरु तुम आअे हो-थे-होगे
 वारु वच्चि अुन्नारु-अुंडिरि-अुंदुरु (पुं.) वे आअे हैं-थे-होंगे
 अवि वच्चि अुन्नवि-अुंडेंनु-अुंडुनु (अमहत्)
 वीरु वच्चि अुन्नारु-अुंडिरि-अुंदुरु (पुं.) ये आअे हैं-थे-होंगे
 अवि वच्चि अुन्नवि-अुंडेंनु-अुंडुनु (अमहत्)
 तमरु वच्चि अुन्नारु-अुंडिरि-अुंदुरु आप आअे हैं-थे-होंगे

नेनु वच्चि अन्नानु-अंटिनि-अंदुनु
नीवु वच्चि अन्नानु-अंटिवि-अंदुवु
आमँ वच्चि अन्नदि-अंडँनु-अंडुनु
ओमँ वच्चि अन्नदि-अंडँनु-अंडुनु
मेमु (मनमु) वच्चि अन्नानु-अंटिमि
अंदुमु

मीरु वच्चि अन्नारु-अंडिरि-अंदुरु
वारु वच्चि अन्नारु-अंडिरि-अंदुरु
वीरु वच्चि अन्नारु-अंडिरि-अंदुरु
तमरु वच्चि अन्नारु-अंडिरि-अंदुरु
नेनु तमतो रावच्चुना ?

अपन्यासमुंटे नेनु वत्तुनु ।
अिप्पुडु मीरु काँन्त सेपु निदुर
पोदुरुगाक ।

कूड सिरा बुडि कलमु तप्पक
तीसिकाँनि वत्तुरगाक ।
तमरु प्रयत्तमुचेसिन अँडल
सफलत गिट्टुनु ।

मीरु अक्कड पोते
वारिनि तप्पक चूडंडि ।

मेमु-मनमु-वारिकि सहायमु
चेयुदुमुगाक ।

तमकु तेनीरु तँप्पिचना ?

मीरु अिदाक अँन्निपाठमुलु चदि-
वियुन्नारु ?

मैं आओ हूँ-थी-हूँगी
तू आओ है-थी-होगी
वह आओ है-थी-होगी
यह आओ है-थी-होगी
हम आओ हैं-थी-होगी

तुम आओ हो-थी-होगी
वे आओ हैं-थी-होगी
ये आओ हैं-थी-होगी
आप आओ हैं-थी-होगी
मैं आपके साथ आऊँ ?
व्याख्यान हो तो मैं चलूँगा ।
अब आप थोड़ी देर सोओं ।

साथमें दवात, कलम अवश्य
लाओं ।

यदि आप कोशिश करें तो
सफलता मिलेगी ।

अगर तुम वहाँ जाओ तो
अनुसे जरूर मिलो ।

हम अनुकी मदद करें ।

क्या आपके लिअे चाय
मँगाऊँ ?

तुमने अबतक कितने पाठ
पढ़े हैं ?

नेनु सुमार पदकाँण्डु पाठमुलु चदिवियुन्नानु ।	मैने कुछ ग्यारह पाठ पढ़े हैं
नेनु-प्रश्नलु अन्नियु वेसि अुन्नानु ।	मैने सब-प्रश्न लगाये हैं ।
वारु पलु चलचित्रमुलु चूचि । अुन्नारु ।	अुन्होंने कअी चलचित्र देखे हैं ।
नेनु तम कवित चदिवि अुन्नानु ।	मैने आपकी कविता पढ़ी है ।
गुरुबुगारु तमरिनि पिलिचि अुन्नारु ।	गुरुजीने आपको बुलाया है ।
मा अर्जीनि नीवु वारिकि अिच्चि अुन्नाव ?	हमारी अर्जी तूने अुनको दी है?
तमरिनि गुरिचि नेनुचाल विनि अुन्नानु ।	आपके बारेमें मैने बहुत सुना है ।
तमकु व्याकरणमु अँवरु नेपि अुन्नारु ?	आपको व्याकरण किसने सिखाया है ?
मेमु तम अुपन्यासमुनु विटिमि ।	हमने आपका भाषण सुना था ।
मीरु पुस्तकमुलु काँन्नारा ?	तुमने किताबें खरीदी थीं ?
वारु अेमि तीसिकाँनि अुँडिरि ?	अुन्होंने क्या लिया था ?
वाडु (आमँ) चीर काँनि अुँडँनु ।	अुसने साड़ी ली थी ।
नेनु अन्नि प्रश्नलकु जवाबु ब्रासियुंटिनि ।	मैने सभी प्रश्नोंके अुत्तर लिखे थे ।
नेनु तमतो चँप्पियुंडलेदा ?	मैने आपसे कहा था न ?
वारु सरिगा चँप्पिरि ।	अुन्होंने ठीक कहा था ।
तमरु वारि अिटिकि अेल पोयिरि?	आप अुनके घर क्यों गये थे ?
वाडु अप्पुडु निदुर पोयि अुँडँनु ।	वह तो अुस समय सोया था ।

नेनु अदेकथ नीकु अितकु पूर्वमु मैंने यही कहानी तुम्हें अिसके पूर्व
 चैप्पियुंतिनि (विनिपिचि अुंतिनि) । बताओ थी (कह सुनाओ थी) ।
 ना अिटिकि अतिथुलु वच्चि अुंडिरि । मेरे घर मेहमान आये थे ।
 किंदटि वर्षमु वान बागुग पिछले वर्ष खूब वर्षा हुआ थी—
 कुरिसि अुंडेनु । (पानी बरसा था) ।
 दर्जी अंगी कुट्टि अुंडुनु । दर्जीने कमीज सी होगी ।
 चाकलि वस्त्रमुलु अुतिकि अुंडुनु । धोबीने कपड़े धोए होंगे ।
 वाडु (आमँ-आदि) पनि चेसि अुंडुनु । उसने काम किया होगा ।
 वारु ज्ञप्ति परचुकाँनि अुंदुरु । अुन्होंने याद (स्मरण) किया होगा ।
 मीरु वारिनि चूचि अुंदुरु । तुमने अुन्हें देखा होगा ।
 वारु अिप्पटिकि अंदि अुंदुरु । वे अबतक पहुँची होंगी ।
 नेनु ओ कथ विनि अुंदुनु । मैंने यह कहानी सुनी होगी ।
 अथवा अँक्कडैन चदिवि अुंदुनु । या कहीं पढ़ी होगी ।
 तमरु हिन्दि परीक्षलु अिच्चि आपने हिन्दीकी परीक्षाअें
 अुंदुरु । दी होंगी ।
 मीरु मराठि परीक्ष अिच्चि तुमने मराठीकी परीक्षा दी
 अुंदुरु । होगी ।

संख्याअें ।

आँकटि	अेक
रँण्डु	दो
मूडु	तीन
नालुगु	चार
अैदु	पाँच
आरु	छह

अेडु	सात
अँनिमिदि	आठ
ताँम्मिदि	नौ
पदि	दस
पदकाँण्ड	ग्यारह
पड्डेण्डु	बारह
पदुमूडु	तेरह
पदुनालुगु	चौदह
पदुनैदु	पंद्रह
पदुनारु	सोलह
पदुहेड	सत्रह
पदँनिमिदि	अठारह
पंताँम्मिदि	अुन्नीस
अिरवै	बीस
मुप्पै	तीस
नलभै	चालीस
याभै	पचास
अरवै	साठ
डँभै	सत्तर
अँनभै	अस्सी
ताँम्भै	नब्बे
वंद (या) नूरु	सौ

बीसके बाद 'अिरवै' आदिके साथ अेक, दो, तीन आदिका तँलुगु शब्द जोड़नेपर पूरी संख्या आ जायेगी जैसे : अिरवैअँकटि (अिक्कीस) अिरवै ताँम्मिदि (अुनतीस) मुप्पैमूडु (तेंतीस) अँनभैताँम्मिदि (नौवासी) ताँम्भैताँम्मिदि (निन्नाब्बे) आदि ।

अिरवैअंद (पचीस) 'पातिक' भी कहलाता है। अेक सौ अेक 'नूट ऑकटि' कहलाता है। वंद ऑकटिका भी प्रयोग चलता है। 'नूट' के बाद कोअी संख्या जोड़नेसे सौ और अुस संख्याका बोध होगा। नूट पदि-अेक सौ दस।

सौके पूर्व रँण्डु, मुडु आदि संख्याअें जोड़नेसे 'अुतने सौ' का बोध होगा।

वँय्यि	हजार
लक्ष	लाख
कोटि	करोड़

'हजार' के बाद 'वँय्यिन्नि' और कोअी संख्या लगानेसे हजार और अुस संख्याका बोध होगा : वँय्यिन्नि आरु-अेक हजार छह; वँय्यिन्नि अँनिमिदि वंदल नलभैनालुगु-अेक हजार आठ सौ चवालीस आदि। 'वँय्यिन्नि' के पूर्व 'अेक' लगानेकी जरूरत नहीं है। "वँय्यिन्नि ताँम्मिदि वंदल (नूट) ताँम्मैताँम्मिदि" (अेक हजार नौसौ निन्नान्वे) के बाद 'वँय्यि' का बहुवचन रूप 'वेलु' हो जाता है। 'वेलु' के पूर्व कोअी संख्या लगानेसे अुतने हजारका बोध होगा; मूडु वेलु-तीन हजार; ताँम्मै वेलु-नव्वे हजार आदि। दो हजारके बाद "वेल" के साथ कोअी संख्या जोड़नेपर अुतने हजार और अुतनी संख्याका बोध होगा। रँण्डु वेल नूट मुप्पंयारु-दो हजार अेक सौ छत्तीस।

पावु पाव

हर संख्याके साथ अनुस्वार(मकार) लगाकर 'पावु' लगानेसे हिन्दीमें 'सवा' लगानेका अर्थ होगा--

ऑकटि पावु	सवा-सवा अेक
रँण्डुपावु	सवा दो
पदिपावु	सवा दस
पदँनिमिदिपावु	सवा अठारह
अरवै नालुगुपावु	सवा चौंसठ आदि।
अर्ध	आधा

हर संख्याके साथ "न्नर" जोडनेसे "साढ़े" लगानेका अर्थ होगा ।

ऑकटिन्नर	डेढ़
रँण्डुन्नर	ढाओ
अैदुन्नर	साढ़े पाँच
पदकाँण्डुन्नर	साढ़े ग्यारह आदि ।
मुप्पावु	पौन ।

हर संख्याके साथ अनुस्वार (मकार) लगाकर मुप्पावु लगानेसे "वह संख्या और तीन पाव" का अर्थ होगा ।

ऑकटिम्मुप्पावु	पौने दो
रँण्डुम्मुप्पावु	पौने तीन
अैदुम्मुप्पावु	पौने छह ।
पँड्रँण्डुम्मुप्पावु	पौने तेरह आदि ।

दिन

आदिवारमु-रविवार; सोमवारमु-सोमवार; मंगलवारमु-मंगलवार; बुधवारमु-बुधवार; बृहस्पतिवारमु-गुरुवार; शुक्रवारमु-शुक्रवार; शनिवारमु-शनिवार ।

मास

चैत्रमु; वैशाखमु; ज्येष्ठ; आषाढ़; श्रावण; भाद्रपद; आश्वयुज; कार्तिक; मार्गशीर्ष; पुष्य; माघ; फाल्गुन ।

महीनेका आरम्भ अमावस्याके बाद प्रतिपदाको होता है ।

१. परिचयम्

१. परिचय

नमस्कारम्। वारु अँवर ? वीरु ना	नमस्ते ! वे कौन हैं ? ये मेरे
मित्रुलु । नमस्कारम् ।	मित्र हैं । नमस्कार ।
वीरु अँवर ? वीरु ना	ये कौन हैं ? ये मेरे गुरुजी
गुरुवुगारु । नमस्कारम् ।	हैं । प्रणाम ।
तम पेरु अेमंडि?	आपका शुभ नाम क्या है ?
ना पेरु...।	मेरा नाम है ।
तम अिंठि पेरु अेमंडि ?	आपका उपनाम क्या है ?
मी तंङ्गिगारि पेरु अेमि ?	आपके पिताजीका नाम क्या है ?
तमरु अँक्कड़ वसिंचु चुन्नारु ?	आप कहाँ रहते हैं ?
मेमु (मनमु) वर्धलो वसिंचु	हम वर्धा रहते हैं ।
चुन्नामु ।	
मी अिल्लु नगरपु अे भागमुलो	आपका घर शहरके किस
अुन्नदि ?	भागमें हैं ?
अिक्कड़ नुंचि ना वस चाल	यहाँसे मेरा निवासस्थान बहुत
दूरम् ।	दूर है ।
तम पूर्ण चिरु नाम चैप्पंडि ।	आप अपना पूरा पता बताअिअे ।
व्रासिकॉण्डि ।	लिख लीजिअे ।
✓ तमरु अँक्कड़ नुंडि	आप कहाँसे आ रहे हैं ?
वच्चु चुन्नारु ?	
नेनु तिन्नग बम्बअी नुंडि	मैं सीधे बम्बअीसे आ रहा हूँ ।
वच्चु चुन्नानु ।	
तमरु अँक्कड़ पोवुदुरु ?	आप कहाँ जाअेंगे ?
भा. भा. तेलुगु—४	

नेनु अिप्पुडु नागपुरिकि
 पोवुदुनु ।
 तम बंधुवुलु अँवरैन् अक्कड़
 अन्नारा ?
 ना बंधुवुलु-चुट्टालु अक्कड़ चाल
 अन्नार ।
 अक्कड़ नाकु कान्दर मित्रुलुनु
 अन्नार ।
 तमरु अक्कड़ अेमि पनि
 चैयुचुन्नार ?
 नेनु कार्यालयमुलो गुमास्तानु ।
 मरियु चदुवुचुन्नानु ।
 तमरु अे पाठशाललो चदिवँदर ?
 तमरु अे तरगतिलो चदुवुचुन्नार ?
 नीवु राष्ट्रभाष परीक्षलो
 अुत्तीर्णुडवा ?
 अवुनंडि । अे परीक्ष ?
 अे केंद्रमु नुंडि ?
 अक्कड़ राष्ट्रभाष तरगतुलु
 जरुगुचुन्नवा ?
 अवुनंडि तरगतुलु सरिगा
 जरुगुचुन्नवि ।
 अँवरँवर नेपिस्तार ?
 पलु अुपाध्यायुलु नेपुचुन्नार ।
 अयिते नेनु अिटिलोने तयार
 चैसिकाण्टिनि ।

में अब नागपुर (को) जाअूंगा ।
 क्या आपके कोअी रिश्तेदार
 वहाँ हैं ?
 मेरे नाते रिश्तेके लोग वहाँ
 बहुत हैं ।
 वहाँ मेरे कुछ मित्र भी हैं ।
 आप वहाँ क्या काम करते हैं ?
 मैं दफ्तरमें लेखक हूँ ।
 और पढ़ता भी हूँ ।
 आप किस पाठशालामें पढ़ते हैं ?
 आप किस वर्गमें पढ़ते हैं ?
 क्या तुम राष्ट्रभाषाकी परीक्षामें
 अुत्तीर्ण हो ?
 जी हाँ । कौनसी परीक्षा ?
 किस केंद्रसे ?
 वहाँ राष्ट्रभाषाके वर्ग चलते हैं ?
 जी हाँ, वर्ग बराबर चलते हैं ।
 कौन-कौन पढ़ाते हैं ?
 कअी अध्यापक पढ़ाते हैं ।
 किन्तु मैंने अपनी तैयारी घरपर
 ही की ।

२. सत्कारमु

२. खातिरदारी

मीकु ऐमि सत्कारमु चेतुनु ? आपकी क्या खातिर करूँ ?
 मीकु तेनीरु प्रियमे कदा ? आप चाय पसंद करते हैं न ?
 तमरु तेनीरु त्रागुतारा ? लेदंडि । * आप चाय पिअेंगे ? जी नहीं ।
 वेडि पालु तीसिकॉण्डि । सरे, गरम दूध लीजिअे । अच्छा,
 तीसिकोरंडि । लाजिअे ।
 माँदट अेदैन तिंटारा ? अिदिगो पहलें कुछ खाअेंगे ? लीजिअे,
 नीरैन त्रागंडि । पानी तो पीजिअे ।
 कूरूचॉण्डि, अिटु ओला बैठिअे । अिधर अैसे बैठिअे ।
 कूरूचॉण्डि ।
 नीवु अिटु कूर्चो । + तुम यहाँ बैठो ।
 नैम्मदिगा कूर्चो । सरे । आरामसे बैठो । ठीक है ।
 तमरु कुर्ची पे कूरूचॉण्डि । आप कुर्सीपर बैठिअे ।
 भोजनमु चेसि अयिनदा ? भोजन कर चुके ?
 नेडु नीवु ना अिटिलो भोजनमु आज तुम मेरे घर भोजन करो ।
 चेयुमु । अिप्पुडुकादु । अभी नहीं ।
 मरि अैप्पुडु वच्चेंदरु ? रेपु अुदयम् । फिर कब आअेंगे ? कल सुबह ।
 नेडु सायंत्रमु रा जालरा ? आज शामको नहीं आ सकेंगे ?

* यदि जी नहीं से मतलब “ में नहीं पीता ” है तो लेदंडि ; यदि “ मुझे नहीं चाहिअे ” हो तो “ वदंडि ” होगा ।

+ बताया जा चुका है कि वस्तुतः तेलुगुमें तू और तुमका प्रयोग अेक सा होता है । पिछले पाठोंमें अन्तर समझानेके लिअे ‘तुम’ का अर्थ मीरु बताया गया । पर सचमुच मीरु और तमरुमें अन्तर कम है । आगे तुम और तू का अेक सा अर्थ बताया जाअेगा ।

प्रयत्नं चेसँदनु (प्रयत्निचँदनु) सरे। कोशिश करूँगा। अच्छी बात है।
रेपु अदयम् रंडि। तप्पक रंडि। कल सुबह आअिअे। अवश्य
आअिअे।

नेनु तमरिनि प्रतीक्षिचुदुनु। मैं आपका अितजार करूँगा।
अिप्पुडु अँत समयमु आयँनु? अभी क्या समय हुआ?
मी गडियारमुलो अँनि गंटलु? आपकी घड़ीमें कितने बजे हैं?
ना गाडियारमुलो सरिगा मेरी घड़ीमें ठीक नौ बजे हैं।
ताँम्मिदि गंटलु। मी गडियारमु आपकी घड़ी कुछ पीछे है क्या?
काँच्चँमु वँनु बडि अुन्नदा? मी ऐसा लगता है कि आपकी*
गडियारमुकाँच्चँमु मुंदुगा घड़ी कुछ आगे है।

पोवुनटलु कनिपिंचुचुन्नदि।
अिप्पुडु पदिम्मप्पावु अयि अुंडुनु। 'अभी पौने ग्यारह बजे होंगे।
अिक्कडि गडियारमुलो पदि यहाँकी घड़ीमें दस बजकर
गंटलयि (काँट्टि) याभैयैदु पचपन मिनट हुअे।
निमिषमुलायँ।

सरे, पदकाँण्डु (काँट्टुटुकु) गंटलकु ठीक है—ग्यारह बजनेमें पाँच
अँदु निमिषमुलुन्नवि। मिनट कम हैं।
अिक्कड नुंडि पदकाँण्डुन्नर यहाँसे साढ़े ग्यारह बजे
गंटलकु पोदमु। चलेंगे।

अिन्दुलो मीकु अेमियु अभ्यन्तरमु अिसमें आपको कोअी आपत्ति
लेदु गदा? तो नहीं है न?
पदकाँण्डुम्पावुकु पोते? सवा ग्यारह बजे चलें तो?

* जहाँ जहाँ वाक्यमें "कि" रहता है वहाँ तँलुगु वाक्यमें "कि" के

मीरु मरि अँक्कडैन पोवल्लेना ? क्या आपको कहीं और जगह जाना है ?

अेमि पनि ? अवसर मैनदि । क्या काम है ? जरूरी है ।

सरे, अयितो पदकॉण्डु अयि अिरवै अच्छा तो ग्यारह बीसको यहाँसे निमिषमुलकु अिक्कडनुंडि पोवुदमु । चलेंगे ।

सरियैन वेळकु पोयि अंदुदुमु । ठीक समयपर पहुँच जाअेंगे ।

आलस्यमु अयिते कूड अैदु आरु देर हुआ भी तो पाँच सात निमिषमुल आलस्य मगुनु । मिनटकी देर होगी ।*

वानिनि (आमँनु) संदर्शिचडमु अुससे भेंट वहीं हो जाअेगी ।
अक्कड़े अयि पोतुंदि ।

सँलवु दिनमुलो अँप्पुडैन रंडि । कभी छुट्टीके दिन आअिअे ।
सरे नमस्कारम् अच्छा नमस्ते ।

* (तेलुगुमें पाँच सातके स्थानपर पाँच छः का प्रयोग होता है ।)

३. रोगितो सम्भाषण

३. बीमारसे बातचीत

अेमोय ! नी आँळु* अेलागु
अुन्नदि ।

ना आँळु बाग लेदंडि ।

तम आँळु ? ना आँळु बागुग
अुन्नदि ।

मीकु अेमि चेयुचुन्नदि ।

क्यों भाअी ! तुम्हारी तबियत
कैसी है ?

मेरी तबियत ठीक नहीं है ।

आपकी तबियत ? मेरी तबियत
ठीक है ।

आपको क्या हो रहा है ?

* 'आँळु' शब्दका अर्थ "शरीर" है । पर अँसे प्रसंगोंमें अुसका "तबियत" के अर्थमें प्रयोग होता है ।

तल नाँप्पि वेयुचुन्नदि ।
काँञ्चैमु ज्वरमु कूड अुन्नदि ।

माँन्ननुचि जलुबु चेसिदि ।

कडुपुलो तेलिकगा नाँप्पि
वेयुचुन्नदि ।

माँन्न अटुमाँन्न तिडि अरग
लेदु ।

निन्न रात्रि पलुमार विरेचन
मयिनदि ।

नेडु तल चुट्टु चुन्नदि ।

आँकटि रेंडु सारुलु वांति कूड
आयेंनु ।

दग्गु वच्चुचुन्नदा ? लेदंडि,
दग्गु लेदु ।

रात्रि नीकु निदुर बाग वच्चिनदा ? रातमें तुम्हें अच्छी नींद आओ ?
अवुनु, काँञ्चैमु निदुर
वच्चिनदि ।

मंदु पुच्चुकाँण्टुन्नावा ?

अवुनंडि, नेडु मंदु तौप्पिचितिनि । जी हाँ ! दवा आज मँगाओ हैं ।

अे डाक्टर-मंदु तीसिकाँनुचुन्नावु ? किस डाक्टरकी दवा लेते हो ?

नालिक चूप्पिचु ।

नन्नु नी नाडि चूड निम्मु ।

ज्वरम् अँक्कुवे ।

अँन्नि दिनमुलुग ज्वरम् ?

मूडु दिनमुलुगना ? कंड्लु मंडु
चुन्नवि ।

सर दर्द हो रहा है ।

थोड़ा बुखार भी है ।

परसोंसे सर्दी (जुकाम) हो
गयी है ।

पेटमें हलकासा दर्द हो रहा है ।

नरसों तरसों खाना हजम नहीं
हुआ ।

कल रातको कभी बार दस्त हुअे ।

आज सिरमें चक्कर आ रहे हैं ।

अेक दो बार अुलटी तक हुओ थी ।

खाँसी आती है ? जी नहीं, खाँसी
तो नहीं है ।

हाँ, थोड़ी नींद आओ ।

दवा ले रहे हो ?

जी हाँ ! दवा आज मँगाओ हैं ।

किस डाक्टरकी दवा लेते हो ?

जीभ दिखाओ ।

मुझे तुम्हारी नब्ज देखने दो ।

बुखार तेज है ।

कितने दिनोंसे बुखार है ?

तीन दिनसे ? आँखें जल रही हैं ।

अदियु तिनुटकु त्रागुटकु अभि- कुछ खानेपीनेकी अिच्छा नहीं
लाष लेदु । होती है ।

बत्ताय पंडु रसमु त्रागु । मोसम्बीका रस पिओ ।

पंडलु तिन गलवु । फल खा सकते हो ।

मिरपकाय मसाल वेंपुडु पदार्थालु मिर्च मसाले और तले पदार्थ न
तिनकु । खाओ ।

काँचेंमु सगु बिय्यमुकंजि, थोड़ी साबूदानेकी खीर, मीठा
तिय्यनि मज्जिग, खिचड़ी मट्ठा, खिचड़ी खा सकते हो ।

पुच्चुको वच्चुनु ।

तेनीरु काफी त्राग वच्चुनु । चाय काफी पी सकते हो ।

भोजनमु चैयकुमु । भोजन मत करो ।

ज्वरमुलो अेमियु तिन बोकु । बुखारमें कुछ न खाओ ।

ओ मंदु पुच्चुको । यह दवा लो ।

४. कुटुम्बमु लोनिवारु

मा कुटुम्बमु चाल पेंददि। मा तं-
ड्रिकि पूल तोट आँकटि कद्दु ।
माली आ तोटनु संरक्षिचु
चुन्नाडु । ना तल्लि पातिलो
चेंदल चेमलकु नीरु पारुदल चैयु-
चुन्नदि । ना सोदरुलुनु सोदरी-
लुनु पुव्वुलु अेरुकाँनु चुन्नारु ।

४. परिवारके लोग

हमारा परिवार बहुत बड़ा है ।
मेरे पिताजीका फूलोंका अेक
बाग है । माली अुस बागकी
देखभाल करता है । मेरी माताजी
क्यारियोंमें पेड़ पौधोंमें पानी
देती हैं । मेरे भाओ और बहनें
फूल चुनती हैं ।

पुव्वु विकसिंचिते सुवासनबाग
व्यापिंचुचुन्नदि ।

नालुगु वैपुलनु सुगंधमयमुग
व्यापिंचु चुन्नदि ।

कॉन्नि समयमुलो ना पिनतंङ्गि
(या पॅदतंङ्गि) पूल बंति अथवा
दंड चेसॅदरु ।

ना पिनतल्लि (या पॅदतल्लि)
अंदुलो पुव्वुलुनु चॅट्ल आकुलुनु
माँगलुनु ताँडुगुचुन्नदि ।

नीरु दारकनप्पुडु पुव्वुलु
अँण्डिपोवुनु ।

ना कुमारुलुनु कूतुरुलुनु चाल
अल्लरि चेसॅदरु । दुष्टुलु ।

बागा अल्लरि चेसॅदरु ।

चप्पुडु चेसॅदरु ।

ना आँक कुमारुडु पूलनु
तँञ्चि दल्लमुलुगा चेसॅदडु ।

मरियु ताँक्कि वेसॅदडु ।

ना वदिनँ वानिनि बॅदरिंचु
चुन्नदि ।

फूल खिलते हैं तो खुशबू खूब
फैलती है ।

चारों ओर सुगन्ध ही सुगन्ध
छा जाती है ।

कभी मेरे चाचा^१ फूलोंका गुच्छा
या फूलोंकी माला बनाते हैं ।

मेरी चाची अुसमें फूल, पौधोंके
पत्ते और कलियाँ भी गूँथती
हैं ।

पानी न मिलने पर फूल कुम्हला
जाते हैं ।

मेरे बेटे और बेटियाँ बहुत ही
अूधमी हैं । नटखट हैं ।

खूब अूधम मचाते हैं ।

शोर करते हैं ।

मेरा अेक लड़का फूलोंको
तोड़कर पंखुड़ियाँ बना देता है ।

और कुचल डालता है ।

मेरी भाभी अुसे डाँटती है ।

१. (चाचाका अर्थ पिताका बड़ा भाभी या छोटा भाभी है । तँलुगुमें
पिताका बड़ा भाभी पॅद तंङ्गी और छोटा भाभी पिन तंङ्गि है ।)

अयिते वाडु लक्ष्म्यं पेट्टुडु ।	लेकिन वह मानता ही नहीं ।
ना आँक पेट्टु कुमार-	मेरे अंक बड़े लड़केका
निकि पण्डलि अयि पोयिनदि ।	विवाह हो गया है ।
मा कोडलि तल्लि अिटिकि	हमारी बहू मायके गयी है ।
(पुट्टिटिकि) पोयि अन्नदि ।	
(पुट्टिटिकि-जन्मके घरको ।)	
आमँ माम-अत्तलनु चाल	वह ससुर-सासका बड़ा
गौरविंचु चुन्नदि ।	आदर करती है ।
नाकु आँक अक्क अन्नदि । आमँ	मेरे अंक दीदी है । आजकल वह
अिप्पुडु तन अत्तगारिटिलो	अपनी ससुरालमें है ।
अन्नदि । ना अन्न यॉक्क बाव-	मेरे भाभीका साला कल आया है ।
मरदि निन्न वच्चिनाडु ।	
वाडु ना सोदरुनि कुमार	वह मेरे भतीजों और भतीजियोंको
लकुन्नु मेन अल्लुलकुनु मंचि	अच्छी अच्छी कहानियाँ सुनाता
कथलु चेंपुचुन्नाडु*	है ।
ना तातलु अव्वलु अिकयु	मेरी दादा-दादी, + नाना-नानी
जीविंचि अुन्नारु ।	अभी जीवित हैं ।

* “भतीजा” का कोई ठीक शब्द तेलुगु या तमिलमें नहीं है । आम तौरपर ‘पुत्र’ का प्रयोग होता है । यदि किसी स्त्रीका भतीजा हो तो वह (तेलुगुमें) ‘मेन अल्लुडु’ कहलाता है । वैसे ही किसी पुरुषका भांजा भी कहलाता है ।

+ तेलुगुमें दादा और नाना दोनोंके लिये ‘तात’ और दादी और नानी दोनोंके लिये ‘अव्व’ चलता है । तातलु-अव्वलु अिस बहुवचन प्रयोगसे दोनों वर्गके “ताता” ओं और “अव्व” ओंका बोध होता है । ‘तात’ का आदर सूचक रूप ‘तातगारु’ है ।

ना मेन अत्त वारि पति,
पिनतल्लि वारि पति, मेन-माम
वारि भार्य अंदरु अन्नार । ना
सोदरी कुमालु कूतुलु, ना पिन
तल्लि कुमालु, मेनमाम कुमालु,
मॉन्न वरकु अक्कडे अँडिरि ।
नाकु बंधुवुलु अनेकुलु अन्नार ।
मा कुटुम्बमुलो चिन्न पेंद अंदरु
कलिसि याभै मंदि अन्नार ।

मेरे फूफा-फूफी*, मौसा-
मौसी और मामा मामी भी हैं ।
मेरे भानजे-भानजियाँ और मेरे
मौसेरे और ममेरे भाभी परसों
तक यहीं थे । मेरे कभी रिश्तेदार
हैं । हमारे परिवारमें बच्चे
बच्चियाँ, स्त्री-पुरुष मिलकर
पचास व्यक्ति हैं ।

*फूफीका तेलुगु शब्द मेन अत्त है, पर फूफाका कोई शब्द नहीं है ।
मौसीका अर्थ हिन्दीमें माकी बहिन है । इसका समानार्थी शब्द तेलुगुमें
नहीं है । पिन तल्लि अक शब्द है (छोटी माँ); पेंद तल्लि अक दूसरा
शब्द है—बड़ी माँ । ये दोनों शब्द मौसीके अर्थमें प्रयुक्त होते हैं । चाची
या काकीके अर्थमें भी प्रयुक्त होते हैं । वैसे ही पिन तंड़ि और पेंद तंड़ि
मौसा और चाचा या काकाके अर्थमें प्रयुक्त हैं । मौसेरे भाभी-ममेरे भाभी-
अन दोनोंके लिये अलग शब्द नहीं हैं । मौसीका पुत्र-मामाका पुत्र जैस
प्रयोग ही चलता है ।

५. ना काँत्त अल्लु

आ कुटीरमु चूडंडि । आ कुटीरमुनकु काँञ्चैमु दूरमुन आ राजगृहमुवंति भवनमु कनिपिंचु-चुन्नदि कदा । अदि मा पात अल्लु । मरियु अदि मा काँत्त अल्लु । वाकिलि तँरवंडि । अदिगो चूडंडि मा तोट । आ वैपु अदि तँरचिन अंगणमु । अंगणमु मध्य आँक हौजु अन्नदि । अंदुलो नीटि गाँट्टुमुन्न अन्नदि ।

रंडि, मँटलु, जाग्रत्तग रंडि । वराण्डाकु आँक वैपुन कूरचाँनु गदि अन्नदि । कूरचाँनु गदिकि पक्क गदिलो चाप परुप बडि अन्नदि । अवि रँण्डु मंचालु । अदि ना मंचमु । मंचमु पै जमखाना अन्नदि । काँस लो आ परुपुलु चुट्टि अंचि अन्नवि ।

अंदुरुगा नेनु चद्रुवु गदि अन्नदि । अंदुलो आँक मेज, रँण्डु अलमारुलु, चैयिगल कुचि आँकटि, चैअलेनि कुचि आँकटि मरि विश्रान्ति-कुचि अन्नवि ।

५. मेरा नया घर

वह झोंपड़ी (कुटिया) देखिअे । अस झोंपड़ेसे कुछ दूरी पर वह महल जैसी अमारत दीख रही है न ? वह हमारा पुराना मकान है । और यह हमारा नया घर है । फाटक खोलिअे । देखिअे यह हमारा बगीचा । असा ओर वह खुला आँगन है । आँगनके बीच अेक छोटासा हौजा है । असमें पानीका नल भी है ।

चलिअे, सीढियाँ सम्हलकर चलिअे । बरामदेके अेक ओर बैठनेका कमरा (बैठक) है । बैठकसे सटे कमरेमें चटाओ बिछी हुओ है । ये दो पलंग हैं । यह मेरी खाट (चारपाओ) है । खटियापर दरी है । कोनेमें वे बिस्तर लपेटकर रखे हैं ।

सामने मेरा अध्ययन कक्षा है । असमें अेक मेज, दो अलमारियाँ, हाथवाली अेक कुर्सी, अेक बिना हाथकी कुर्सी और अेक आराम कुर्सी भी है ।

मूडव गदिलो सामानुलु अंच-
बडि अन्नवि । अंदुलो चित्र,
पेढ़, मूत गलवि, मूत लेनिवि,
ताम्र-अत्तडि डब्बालु अन्नवि ।
कॉन्नि पेट्टेलु अन्नवि । पक्क
लोने अदिगो वंट गदि ।

चूडंडि, पाय्यि, ओ पात्रलु ।
तवा, राट्टंकरं, राट्टेलु चेयुरायि,
गरिटे, स्पूनु, चिमटा,
जिलकड करं, गिन्नलु,
लौटालु, गिन्नलु पळळमुलु,
आसनपीठलु, ओ रागि अत्तडि
विंदेलु, मट्टि विंदेलु, मट्टि
कुंडलु । अदिगो मेकुलो चाट
ब्रेलाड बडि युन्नदि । कॉसलो
अदिगो तिरुगलिरायि अन्नदि ।

अदि स्नान गृहमु । अंदु
बक्कट्टलु, गंगालयमुलु, चम्बुलु,
सम्बु, नूनं, तुवालु (खंडुवा)
अंचि अन्नवि । अदि वेनीटि
बायलरु-अदि नीरु निम्पे बिंदें ।

तीसरे कमरेमें सामान
रखा है । उसमें छोटे बड़े,
ढक्कनदार, बिना ढक्कनके,
तांबे पीतलके डिब्बे हैं । कुछ
संदूकें हैं । पासहीमें वह रसोओ
घर है ।

देखिअे-चूल्हा और ये
बर्तन । तवा, बेलन, चकला,
करछी, चम्मच, चिमटा,
रओ, प्याले, लोटे,
कटोरियाँ, थालियाँ, पीढे और
और ये तांबे पीतलकी गगरियाँ
मिट्टीके घड़े, मटके मटकियाँ
हैं । खूंटोपर वह सूप हैं ।
छलनी टंगी हुओ है । कोनेमें
वह चक्की है ।

यह स्नानगृह है । उसमें
बाल्टियाँ, भगोने, लोटे, साबुन,
तेल, तौलिअे, रखे हैं । यह
गरम पानीका बम्बा और यह
पानी रखनेका हंडा ।

वैनुकटि वैपुन आँक वावि
अनुदि । मरियाँक वैपुन पायि-
काना (मरुगुदाँडि) अनुदि । अदि
वैनुकटि वीधि । अदि मुरिकि
मैल वेयु बुट्ट । अिदुवलन
मुरुकि लेकुंडुनु । वीधि शुभ्रमुग
अंडुनु । अदि जलदारि । दीनि
गुंडा मुरिकिनीरु पारि पोवुनु ।

अदि वैनुकटि अंगणमु । अदि
सुन्नपु गानुग । अटिकलु, राळ्ळु,
सुन्नमु, मन्नु, माँदलगु सामानुलु
अक्कड़ अंचबडि अनुवि ।

रँडव मेड पै मुंदुकु वसारा
अनुदि । वैनुक बयलु अनुदि ।
ओ अिल्लु रँडु मेडलदि । दीनिनि
मूडु मेडलदिगा चेय वलँनु ।
अिदुलो अिक अरुगु कप्प वलँनु ।

मी अिल्लु अँत बागुनुदि ।
नालगु वैपुलनु शुभ्रमुग अनुदि ।
दुम्मु दूसरि अँक्कडनु लेदु । मीरु
शुभ्रत बाग अंचि अनुत्तारु । मी
अिटिलो कावलसिन किडकीलुनु
तलुपुलुनु अनुवि । अिदुवल्ल
गदुललो चीकटि अंडदु ।
कावलसिन वैलुतुरु अंडुनु । गालि
कूड वाग वच्चुनु । मी अिल्लु
मँचि गालि गल अिल्लु ।

पीछेकी ओर अेक कुआँ है ।
दूसरी तरफ सँडास (पाखाना)
है । यह पीछेकी गली है । यह
कूड़ा कचरा डालनेका डलिया
है । अिससे गंदगी नहीं होती ।
गली साफ रहती है । वह
नाली है । अुससे गंदा पानी वह
जाता है ।

यह पिछला आँगन है । वह
चूनेकी चक्की है । अींटें,
पत्थर, चूना, मिट्टी, कबेलू वगैरह
सामान अुधर रखा हैं ।

दूसरी मंजिल पर आगे
छज्जा है । पीछे गच्ची है ।
यह मकान दुमंजिला है ।
अिसे तिमंजिला बनाना है ।
अिसमें अभी छत बनानी है ।

आपका मकान कितना अच्छा
है । चारों ओर सफाई है । कूड़ा
कचरा कहीं भी नहीं है । आपने
सफाई बहुत अच्छी रखी है ।
आपके मकानमें काफी खिड़कियाँ
और दरवाजे हैं । अिससे कम-
रोंमें अंधेरा (अंधकार) नहीं है ।
काफी अुजाला (प्रकाश) है ।
हवा खूब चलती है । आपका
घर हवादार है ।

६. परिश्रम

आँक सामेत कद्दुः रैतु पनि
अुत्तमम्; व्यापारम् मध्यमम्,
सेव अधमम् ।

रैतु पनि लो धान्यमुलु प्रत्ति,
कूर कायलु मुन्नगुनवि अुत्पत्ति
चेय बडुनु । धान्यमुललो
गोधुम, जाँन, मक्क जाँन,
बाजरा, यव धान्यं (वीनि)
तो राँटुँलु चेयुदुरु । काँन्नि प्रदेश
मुललो मुख्यमैन आहारमु
बिद्यमु । आहारमुलो पप्पु चाल
धवसर मैनदि । पँसर, मिनुमु,
शँनग, कंदि, मसूर (अिंदु) नुँचि
पप्पुलु चेय बडुनु । वेरु शँनग,
नुव्वुलु, लेक आवालु लो
नूने तीयुदुरु ।

रैतु पनि चेयुवाडु रैतु लेक
किसानु अनबडुनु । पनिवार
कूलि पनिचेयुदुरु । रैतु अँदुलु,
गुरमुलु, आँण्टुँलु (वीनिनि) उप-
योगिचुनु । वाडु पालुकाँरकु
आवु, बरँ लेक मेकलु पँञ्चुनु ।
पालुतो पँरुगु, पँरुगुतो वँन्नयु
मज्जिगयु मरि वँन्न तो नँय्ययु-
चेय बडुनु ।

६. अुद्योग

अेक कहावत है—अुत्तम खेती,
मध्यम व्यापार, कनिष्ठ नौकरी ।

खेतीसे अनाज, कपास, तर-
कारियाँ आदि चीजें अुत्पन्न की
जाती हैं । अनाजोंमें से गेहूँ,
ज्वार, मका, बाजरा और जौ
की रोटी बनाते हैं । कुछ प्रदेशोंमें
मुख्य अन्न चावल है । आहारमें
दाल आवश्यक है । मूँग, अुड़द,
चना, तूअर, मसूरकी दाल बनती
है । मूँगफली, तिल, या सरसोंसे
तेल निकालते हैं ।

खेती करनेवाला किसान
(खेतीहर, कास्तकार) कहलाता
है । मजदूर मजदूरी करते हैं ।
किसान बैलों, घोड़ों या अँटोंसे
काम लेता है । वह गायें, भैंसें
या बकरियाँ दूधके लिअे पालता
है । दूधसे दही, दहीसे मक्खन
तथा छाछ (मट्ठा) और
मक्खनसे घी बनता है ।

व्यापारमु चैयुवारु व्यापारुलु
अनबडुदुरु मरियु पनि चैयुवारु
पनिवारु अनबडुदुरु । व्यापारि
किराणा, वस्त्रमुलु, मंदुलु
पुस्तकमुलु लेक अन्य वस्तुवुल
दुकाणामुलु नडपुदुरु । वारिनि
दुकाणदारुलु (अंगडिवारु) अंदुरु ।
नगरमुल्लो धान्य मंडी, कूर-
कायल मंडी अंडुनु । वस्त्रमुलु
(तयारु) चैयु मिल्लुलु अंडुनु ।
तकली लेक राटमुतो नूलु वडिकि
वानिनि मग्गमुपै नेसियु
वस्त्रमुचेय बडुनु । वस्त्रमुलु
नेयुवानिनि नेतवाडु अंदुरु । सालें
वारु पारंपर्यमुग नेत पनि
चैयुवारु ।

वस्त्रमुलु कुट्टि अिच्चे पनि
चैयुवाडु दर्जी अनबडुनु । कुम्मरि
मट्टि बिंदेलु, कुंडलु, पात्रलु
माँदलगु वस्तुवुलु चेसे अुद्योगं
चेसँदरु । अित्तडिपनि चैयुवारु
रागी, अित्तडि, कंचु (अी)
धातुवुलतो पलु विधमुलगु
वस्तुवुलु चेसि अम्मदुरु । अिनु-
मुतो, खड्गमु, कत्ति माँदलगु
चिन्न पँद वस्तुवुलु चेसँदरु ।

• व्यापार करनेवाला व्यापारी
और नौकरी करनेवाला नौकर
कहलाता है । व्यापारी किराने,
कपड़ों, दवाबियों, पुस्तकों या
अन्य चीजोंकी दूकानें चलाते
हैं । अन्हें दूकानदार कहते हैं ।
शहरोंमें अनाजमंडी, सब्जीमंडी
होती है । कपड़ा बनानेकी मिलें
होती हैं । तकली या चरखेपर
सूत निकालकर असे करघेपर
बुनकर भी कपड़ा बनाते हैं ।
कपड़ा बुननेवालेको बुनकर
कहते हैं । जुलाहे पीढ़ीगत
पेशेवर बुनकर होते हैं ।

कपड़ा सी देनेका काम
करनेवालेको दर्जी कहते हैं ।
कुम्हार मिट्टीके घड़े, हाँडियाँ,
बर्तन आदि वस्तुअें बनानेका
पेशा करते हैं । ठठेरा तांबा,
पीतल, कांसा धातुओंकी कअी
तरहकी वस्तुअें बनाते और बेचते
हैं । लुहार लोहेसे फावड़े,
कुदाल, खुरपी, छुरी आदि
छोटी बड़ी चीजें बनाता है ।

वडंगि काँय्यलु सरकुलु चैयु
चुन्नाडु । अटिकमेस्त्रि अिड्लु
कट्टुनु । कंसालि बंगारु, वेंण्डि
तो नगलु माँदलगुनवि चैयुनु ।
बंगारु वेंण्डि नगलु चैयुट, अम्मुट,
काँनुट, ताकि अुंचुट (अी) पनुलु
चैयुवारु परापुलु अनवडुदुरु ।
परापु दूकाणमुल्लो अुंगरमु, दंड,
गाजु माँदलगु वस्तुवुलु दारकुनु ।

चिल्लर सामानुवारु मिरप-
काय, मसाला, पसुपु, लवंगमु,
वक्क, वेलकाय, तल्ल जीलकर,
जीलकर, अिगुव माँदलगु वस्तु-
वुलु अम्मुदुरु । मिठायि दुकाणमु-
वाडु मिठायि चैयुनु । मिठायि
दुकाणमुलो जिलेबी, लड्डू, पेड़ा,
बरफी, बतासा, कारपूस-अटुकुलु,
वेंपुडु-पप्पु, पूरिक्कूर माँदलगु
वस्तुवुलु दारकुनु ।

वस्त्रमुलु अुतुकु पनि चेसे
वारिनि चाकलि अंदुरु ।
मंगलि तल वेंण्टुकलु तीयु-गडुमु
बागुचैयु-पनि चैयुनु । मादिग
पादरक्खलु, चेंप्पुलु (अिवि) चेसे
पनि चैयुनु ।

सुतार (बढ़ाई) लकड़ीका
सामान बनाता है । राज मकान
बनाता है । सुनार सोना चाँदीके
गहने आदि बनाता है । सोना-
चाँदीके गहने बनाने, बेचने,
खरीदने और गिरवी रखनेका
धंधा करनेवाले सराफ कहलाते
हैं । सराफी दूकानमें अंगूठी, हार,
कड़े, आदि वस्तुओं मिलती हैं ।

पंसारी मिर्च, मसाला, हल्दी,
लौंग, सुपारी, अिलायची, सौंफ,
जीरा, हींग, आदि चीजें बेचते
हैं । हलवाअी मिठाअी बनाते
हैं । हलवाअीकी दूकानोंमें
जलेबी, लड्डू, पेड़ा, बर्फी
बताशे, सेव-चिवड़ा, तली हुआ
दालें, साग-पूरी आदि चीजें
मिलती हैं ।

कपड़े धोनेके पेशेवरको
धोबी कहते हैं । नाअी बाल
बनाने, दाढ़ी बनानेका पेशा
करता है । मोची जूता, चप्पल,
बनानेका धंधा करता है ।

भारमु मोयुवाडु हमाल् अन-
बडुनु । हमाल् तल पै गानि,
बंडि अंडिनचो बंडिपै अंचि गानि
बरुवु (भारमु) मोयुपनि चैयुनु ।
तांगा बंडिवाडु तांगा बंडि
तोलुनु, रिक्शा वाडु रिक्शा
बंडि लागुनु ।*

बोझा ढोनेवालेको हमाल
कहते हैं । हमाल सामान सिरपर
या गाड़ी हो तो गाड़ीपर रखकर
पहुँचानेका काम करता है । तांगे-
वाला तांगा चलानेका, रिक्शे-
वाला रिक्शा चलानेका काम
करता है ।

पारा पनिचेसे वारिनि
पारादार् अनुदुरु । आँक मनिषि,
दुकाणमु, सभ, संस्थ अथवा
सरकार सेव चेसेवार "नौकर"
अनबडुदुरु । कार्यालयमुललो
पनि चैयुवार क्लर्क लेक बाबू
अनबडुदुरु ।

पहरा देनेवालेको पहरेदार
कहते हैं । किसी व्यक्ति, दूकान,
समिति, संस्था या सरकारकी
नौकरी करनेवाला नौकर
कहलाता है । दफ्तरोंमें काम
करनेवाले क्लर्क या बाबू
कहलाते हैं ।

अंदरु समाजमु याँक्कयु देशमु
याँक्कयु महत्वपूर्ण मैन पारि-
श्रमिक अद्यममुलु चैयु सहयोगि
व्यक्तुलु ।

ये सभी समाज तथा देशके
महत्वपूर्ण अद्योग धंधे करने-
वाले सहयोगी व्यक्ति हैं ।

* हमाल का समान अर्थ रखनेवाला शब्द तँलुगुमें नहीं चलता ।
तँलुगु प्रदेशोंमें तांगा नहीं होता । जहाँ है वहाँ तांगा ही कहलाता है ।

१. आंध्र-देशम्, भाषा, जनलु । १. आंध्र-देश, भाषा और लोग

अे प्रदेशमुन तेलुगु माट-
लाडबडु चुन्नदो दानिनि तेलुगु
प्रदेशमंदुरु । तेलुगुकु मरियाँक
पेरु आंध्र । काबट्टि तेलुगु
प्रदेशमु आंध्र प्रदेशमु अनबडुनु;
तेलुगु भाषा आंध्र भाषा अनबडुनु
मरियु आंध्र प्रदेश निवासुलु
आंध्रुलु अनबडुदुरु ।

आंध्र प्रदेशमु भारतमुलोनि
पेद्द राज्यमुललो आँकटि ।
स्वातंत्र्यमुनकु मुंदु आंध्र प्रदेशमु
याँक्क आँक पेद्द भागमु निजामु
राज्यमुलो अुडेंनु । स्वातंत्र्य-
मुनकु तरुवात कूड कॉन्नि
संवत्सरमुल वरकु आ भागमु
हैदराबादु राज्यमु लोपलने
अुडेंनु । अप्पुडे कॉन्नि संवत्सर-
मुलु क्रिदट राज्यमुल नूतन
संगठन मयिनप्पुडु आंध्र प्रदेश
मंतयु आँक राज्यमुग निर्मिप-
बडेंनु ।

जिस प्रदेशमें तेलुगू भाषा
बोली जाती है उसको तेलुगू
प्रदेश कहते हैं । तेलुगुका दूसरा
नाम आंध्र है । असलिये तेलुगु
प्रदेश आंध्र प्रदेश कहलाता है;
तेलुगु भाषा आंध्र भाषा कह-
लाती है और आंध्र प्रदेशके
निवासी आंध्र कहलाते हैं ।

आंध्र प्रदेश भारतके बड़े
राज्योंमेंसे एक है । स्वतंत्रताके
पूर्व आंध्र प्रदेशका एक बड़ा
भाग निजामके राज्यके अन्तर्गत
था । स्वतंत्रताके बाद भी कुछ
वर्षोंतक वह भाग हैदराबाद
राज्यके अन्तर्गत ही था । अभी
कुछ वर्ष हुए राज्योंका नया
संगठन हुआ तब तमाम आंध्र
प्रदेश एक राज्यमें संगठित
हुआ ।

तैलुगु द्राविड परिवारपु
भाष । द्राविड परिवारपु नालुगु
मुख्य भाषलु तमिळ, तैलुगु,
कन्नड़, मलयाळमुलु । ओ नालुगु
भाषललो अँदि दैनितुंडि पुट्टिनदि
अनि चैप्पुट कठिनमु । ओ नालुगु
भाषलकु मूल रूपमु आँकटि
अनि मात्रमे चैप्प साध्य मगुनु ।
तैलुगु भाष श्रुति मधुरमु ।
भाष तैलियनि वारु कूड विनि
मुग्धुलयँदरु । तमिळ प्रदेशमुलो
अिप्पटिकिन्नि तैलुगु पाटल
अचारमु अधिकमु ।

आंध्र जनुलु चाल अुदारुलु,
पाटु बडुवारु, देशभक्तुलु ।
आंध्रुल भोजनमुलो कारमु
अँक्कुव अनि जनुल अभिप्रायमु ।
अयिते वीरु अँन्त नैय्य पेरुगु
चाडुदुरो अंत भारतमुलोनि अन्य
प्रदेशपु जनुलु अरुदुगने वाडुदुरु ।
आंध्र देशमुन तिव्कन सोमयाजि,
यर्रा प्रगड़, नन्नय्य भट्टु,
श्रीनाथुडु, वेमन मुन्नगु प्रसिद्धि
चैन्दिन प्राचीन कवुलुंडिर । टंगु-
टूरि प्रकाशम्, काँण्डा वेंकटप्पय्य,
दुगिराल गोपाल-कृष्णय्य,
न्यापति सुब्बारावु मुन्नगु देश
भक्त नायकुलु अँडियुन्नारु ।

तेलुगु द्राविड परिवारकी
भाषा है । द्राविड परिवारकी
चार मुख्य भाषाँ तमिल, तेलुगू,
कन्नड़ और मलयालम हैं । यह
कहना कठिन है कि अिन चारों
भाषाओंमें कौन किससे पैदा
हुआ । केवल अितना कहा जा
सकता है कि अिन चारों भाषाओं-
का मूल रूप अेक है । तेलुगू भाषा
श्रुति मधुर है । भाषा न जानने-
वाले भी सुनकर मुग्ध रह जाते
हैं । तमिल प्रदेशमें अब भी
तेलुगू गीतोंका बहुत प्रचार है ।

आंध्र लोग बड़े अुदार, मेह-
नती और देश भक्त होते हैं ।
लोगोंका विश्वास है कि आंध्रोंके
भोजनमें तीखा अधिक रहता है ।
पर ये जितना घी और दहीका
अुपयोग करते हैं अुतना शायद
ही भारतके किसी अन्य प्रदेशके
लोग करते हों । आंध्र देशके
तिव्कन सोमयाजी, यर्रा प्रगड़,
नन्नय भट्टु, श्रीनाथ, वेमन आदि
प्रसिद्ध प्राचीन कवि हैं । टंगुटूरि
प्रकाशम्, काँडा वेंकटप्पय्या,
दुगिराल गोपाल कृष्णय्या,
न्यापति सुब्बाराव आदि प्रसिद्ध
देश भक्त नेता हुअे हैं ।

आंध्र देशपु गोदावरी कृष्ण नदुलु प्रसिद्धं । अत्तर पिनाकिनियु आँक प्रसिद्ध नदि । आंध्र देशमुन मूडु मुख्य भाग-मुलु कलवु—(समुद्र) तीरपु आंध्र, रायलसीम, तलंगाणा । बंगाळाखातमुनु चेरिनट्लु अंडु भागमु तीरपु आंध्र भागमु । तीरपु आंध्रमुनकु पडमट कर्नाटक (मैसूर) राज्यमुनकु तूर्पुन अन्न भागमु यॉक्क पेरु रायल सीम । ओ भागमुनने प्रसिद्धि चेंन्दिन कृष्णदेव रायुनि प्रधान नगरमु अंडेनु । ओ कारणमु वल्लने दीनि पेरु रायल (रायनि यॉक्क) सीम (प्रदेशमु) अनि पडेनु । ओ भागमु हैदराबादु राज्यमुलो नुंडेनो अदि तलंगाणा अन बडुनु ।

आंध्र देशकी गोदावरी और कृष्णा नदियाँ प्रसिद्ध हैं । अत्तर पिनाकिनी भी अेक प्रसिद्ध नदी है । आंध्र देशके तीन मुख्य भाग हैं—तटीय आंध्र, रायल सीमा और तेलंगाना । तटीय आंध्र वह भाग है जो (समुद्र) बंगालकी खाड़ीसे लगा हुआ है । रायल सीमा उस भागका नाम है जो तटीय आंध्रके पश्चिम और कर्नाटक (मैसूर राज्य) प्रदेशके पूर्वमें है । प्रसिद्ध कृष्णदेव रायका प्रधान नगर अिसी भागमें था । अिसी कारणसे अिसका नाम रायल (रायका) सीमा (प्रदेश) पड़ा । जो भाग हैदराबाद राज्यके अंतर्गत था वह तेलंगाना कहलाता है ।

२. कृष्णदेव रायलु

विजयनगर साम्राज्यमुनु
अेलिन राजुललो श्री कृष्णदेव
रायलु सुप्रसिद्धु । वीरि तंड्रि

२. कृष्णदेव राय

विजयनगर साम्राज्यका
पालन करनेवालोंमें श्री. कृष्ण-
देवराय सुप्रसिद्ध हैं । अिनके

नरस रायलकु अिहृ राणुलु ।
पँद् राणि काँडुकु वीर नरसिंह
रायलु । चिन्न राणि काँडुके
कृष्णदेव रायलु । कृष्णदेव रायल
तैलिवि तेटलचेत पँद् राणिकि
अतनि पै असूय कलिगँनु ।
अतनिनि चंपमनि आमँ मंत्रिनि
आज्ञापिचँनु । तिम्मरसु अनु आ
मंत्रि राजकुमारुनि तन अिट
दाचिबँट्टि राणितो वानिनि
चंपितिनि अनँनु । तिम्मरसु आ
राज कुमारुनिकि राजुलकु
कावलसिन सकल विद्यलु
नेपिरि । आ राजकुमारुडु
तिम्मरसुनु तंड्रिवलँ भाविचि
“अप्पाजी” अनि पिलुचुचुडँनु ।

नरस रायनि तरुवात वीर-
नरसिंह रायलु राजु अयिरि ।
अितकु मुंदे कृष्णदेवरायलु
व्रतिकि युन्नारनुट वँल्लडियायेनु ।
नरसरायलु तन तरुवात कृष्ण-
देवरायले राजु कावलयुननि
कोरिरि । अयिते अन्न अंडग तानु
सिंहासनमँक्कुट तगदनि कृष्ण-

पिता नरस रायलुके दो रानियाँ
थीं । बड़ी रानीका पुत्र वीर
नरसिंहराय था । छोटी रानीका
पुत्र ही कृष्णदेवराय थे । कृष्ण-
देवरायकी बुद्धिमत्ताके कारण
बड़ी रानीकी अनुपर असूया
हुआ । उसने मंत्रीको आज्ञा दी
कि अनुको मार डाले । तिम्मरसु
नामक उस मंत्रीने राजकुमारको
अपने घरमें छिपा रखकर रानीसे
कहा कि मार डाला । तिम्मरसुने
उस राजकुमारको राजाओंके
लिअे आवश्यक सभी विद्याअें
सिखाओं । वह राजकुमार
तिम्मरसुको पितृवत् मानकर
‘अप्पाजी’ कहकर पुकारता था ।

नरसरायके बाद वीर नर-
सिंहराय राजा हुअे । अिसके
पूर्व ही प्रकट हो गया कि कृष्ण-
देवराय जीवित हैं । नरसराय
चाहते थे कि अनुके बाद कृष्ण-
देवराय ही राजा हो । पर
कृष्णदेवरायकी राय थी कि बड़े
भाओके जीतेजी यह अुचित

देवरायलु अभिप्राय पडेंनु । वीर नरसिंहरायलु अँक्कुव कालमु ब्रतिकि युंड लेदु । वारि तरुवात कृष्णदेवरायलु सिंहासन मँक्केंनु ।

कृष्णदेवरायलु राजनीति-कोविदुडु; प्रतापशालि; देशसेवा परायणुडु । आकालमुलो अत-निनि मिचिन योधुडु लेडु । अंदुचे तमिळ, मलयाळ, कळिंग राष्ट्र-मुलुकूड अतनिकि लो बडेंनु । अतनि कालमुलो विजय नगर साम्राज्यमु अत्युन्नत स्थितिकि वचेंनु ।

कृष्णदेवरायलु सकल कळल-नादरिचेंनु । अतडु गॉप्प विद्वांसुडु; कवि; अनेक ग्रन्थमुलु रचिचेंनु । अत-निनाश्रयिचि “अष्टदिग्गजमुलु” अनि प्रसिद्धिककिकन अँनिमिदि गॉप्प कवुलु अंडिरि । प्रति वसंत ऋतुवुलो अतडु कवि सम्मेलन-मुलु जरिपि, कवुलनु सत्करिचु चुडेंनु । अतडु वसिचिन प्रदे-शमु “रायल सीम ” अनबडुनु ।

नहीं है कि वह खुद गद्दीपर बैठे । वीर नरसिंहराय अधिक समय जीते नहीं रहे । अुनके बाद कृष्णदेवराय गद्दीपर बैठे ।

कृष्णदेवराय राजनीति-कोविद, प्रतापी और देश सेवा निरत थे । अुस समय अुनसे बड़ा योद्धा नहीं था । अिस लिअे तमिल, मलयाल और कलिंग राज्य भी अुनके अधीन हुअे । अुनके कालमें विजयनगर साम्राज्य अत्युन्नत स्थितिको पहुँचा ।

कृष्णदेव रायने सभी कला-ओंका समर्थन किया । वे बड़े विद्वान थे । कवि थे; कअी ग्रन्थ रचे । “अष्ट दिग्गज ” नामक प्रसिद्ध आठ बड़े कवि अुनके आश्रयमें थे । हर वसंत ऋतुमें कवि सम्मेलन करवाकर अुसमें कवियोंका सत्कार करते थे । वे जिस प्रदेशमें रहे वह “रायल सीमा ” कहलाता है ।

३. त्यागराजु

मन देशमुन संगीत शास्त्रमु
 अत्तरमुन वेरु रीतिनि दक्खिण-
 मुन वेरु रीतिनि पॅरिगॅनु ।
 अत्तर संगीतमु “ हिन्दुस्तानि
 संगीतमु ” अनियु दक्खिण
 संगीतमु “ कर्नाटक संगीतमु ”
 अनियु पिलुव बडुनु । कर्नाटक
 संगीतमुन पॅञ्चिनवारिलो पुरंदर-
 दासु, त्यागराजु, मुत्तुस्वामि
 दीक्खितुलु, श्यामा शास्त्री अनु-
 वारु प्रसिद्धुलु । पुरंदर दासु
 कीर्तनलु कन्नड़ भाषलो अन्नवि ।
 त्याग राजु कीर्तनलु तैलुगुलोनु,
 दीक्खितुलु [शास्त्रुलु कीर्तनलु
 संस्कृतमुलोनु अन्नवि । तमिळ
 भाषलो सयितमु अनेक गीतमुलु
 गलवु ।

त्यागराजु तमिळदेशमुलो पुट्टि
 पॅरिगिरि । तंजावूरु जिल्लालो
 तिरुवारूरु अनु नगरमुन वारु
 पुट्टिरि । आ नागरमुलोने मुत्तु-
 स्वामि दीक्खितुलुनु श्यामा
 शास्त्रुलुनु पुट्टिरि । त्यागराजु
 संस्कृत भाषयु वेद वेदांगमुलु

३. त्यागराज

हमारे देशमें संगीत शास्त्र
 अत्तरमें अलग रीतिसे और
 दक्खिणमें अलग रीतिसे बढ़ा ।
 अत्तरका संगीत “ हिन्दुस्तानी
 संगीत ” और दक्खिणका संगीत
 कर्नाटक संगीत कहलाते हैं ।
 कर्नाटक संगीतको बढ़ानेवालोंमें
 पुरंदरदास, त्यागराज, मुत्तु-
 स्वामि दीक्खित और श्यामा
 शास्त्री नामक (लोग) प्रसिद्ध
 हैं । पुरंदर दासके कीर्तन
 कन्नड़ भाषामें हैं । त्यागराजके
 कीर्तन तैलुगुमें, दीक्खित और
 शास्त्रीके कीर्तन संस्कृतमें हैं ।
 तमिल भाषामें भी अनेक
 गीत हैं ।

त्यागराज तमिल देशमें ही
 पैदा हुअे और वहीं बढ़े । तंजौर
 जिलेके तिरुवारूर नामक
 नगरमें] वे पैदा हुअे । उसी
 नगरमें मुत्तुस्वामी दीक्खित और
 श्यामा शास्त्री भी पैदा हुअे ।
 त्यागराजने संस्कृत भाषा और

नेर्चुकाँनिरि । वारिकि रामा-
यणमु पै अँक्कुव भक्ति श्रद्ध
कलिगँनु । वारु संगीतमु नभ्य-
सिचि गाँप्प संगीतज्ञुलाअँनु ।

त्यागराजु तँलुगु लो वंदल
काँलदि कीर्तनलु रचिचिरि ।
गीतमुलु तँलुगुलो नुन्ननु, तमिळ
देश मुलो व्यापिचिनटलु आंध्र-
देशमुन व्यापिच लेदु । त्याग-
राजु परम पदमुनाँन्दि वंद संव-
त्सरमुलकटँ अँक्कुव आयँनु ।
नेटिकिनि वीरु रचिचिन पाटलु
विनियु पाडियु आनंदमु पाँन्दु
वारु वेलकाँलदि जनुलुन्नारु ।
संगीत समारोहमनिन त्यागराज
कीर्तनमुलु तप्पक पाड बडुनु ।
त्यागराज कीर्तनमु लेनि संगी-
तोत्सवमे लेदनि चँप्पवच्चुनु ।

त्यागराजु तिरुवैयारु अनु-
क्षेत्रमुन तन तनुवुनु तर्जिअं-
चिरि । पुण्य बहुळ पंचमिनाडु
वारु परमपदमु नाँन्दिरि ।
अिप्पटिकिनि आ तिरुवैयारु क्षेत्र
मुन पुण्य बहुळ पंचमिनाडु प्रति

वेद वेदांगकी शिक्षा पाओी ।
अुनकी रामायणपर बड़ी श्रद्धा
भक्ति हुआी । वे संगीतका
अभ्यासकर बड़े संगीतज्ञ हुअे ।

त्यागराजने तेलुगुमें सैकड़ों
कीर्तन रचे । यद्यपि गीत तेलुगु-
में हैं तो भी तमिल देशमें जैसे
फैले वैसे आंध्र देशमें नहीं फैले ।
त्यागराजको परमपद प्राप्त हुअे
अेक सौ सालसे भी अधिक हो गअे
हैं । आज भी अिनके रचे गीत सुन-
कर और गाकर आनंद पानेवाले
हजारों लोग हैं । संगीत समा-
रोह हो तो त्यागराजके कीर्तन
अवश्य गाअे जाते हैं । कह
सकते हैं कि त्यागराजके
कीर्तनोंके बिना संगीतोत्सव ही
नहीं होता ।

त्यागराजजीने तिरुवैयार
नामक तीर्थस्थानमें अपना तन
त्यागा । पौष कृष्ण पंचमीको
वे परमपदको प्राप्त हुअे ।
आज भी अुस तिरुवैयार तीर्थ
स्थानमें पौष कृष्ण पंचमीके

संवत्सरमुनु त्यागराजोत्सवमु दिन प्रतिवर्ष त्यागराजोत्सव
 चाल वैभवमुतो कॉनियाड वडु- बड़े वैभवके साथ मनाया जाता
 चुन्नदि । वंदल कॉलदि संगीत- है । सैकड़ों संगीतज्ञ तब वहाँ
 जुलु अप्पुडु अच्चटिकेगि चाल जाकर बड़ी भक्ति और श्रद्धाके
 भक्ति श्रद्धतो वारि पाटलु साथ अुनके कीर्तन गाते हैं ।
 पाडुदुरु । लक्षल कॉलदि जनुलु लाखों लोग संगीत सुननेके
 संगीतमु विनुटकु अक्कडिके- लिअे वहाँ जाते हैं ।
 गुदुरु ।

४. श्री राम नवमि अुत्सवमु । ४. श्री राम नवमी अुत्सव ।

श्री राम जननोत्सवमु मन
 देशमंतटयु कॉनियाडुदुरु गानि
 आंध्र देशमुलो कॉनियाडुनट्लु
 मरि अँक्कड़ कॉनियाडरु । अंदु-
 लोनु भद्राचलमुन आी अुत्सवमु
 चाल गारावमुतो कॉनियाड-
 वडुनु । अक्कड़ रामदासु वारु
 कट्टिन श्री रामुल वारि गुडि
 अुन्नदि । आी संदर्भमुन अच्च-
 टिकि लक्षल कॉलदि यात्रीकुलु
 वत्तुरु ।

श्री राम-जन्मोत्सव हमारे
 देश भरमें लोग मनाते हैं पर
 आंध्र देशमें जैसे मनाते हैं
 वैसे और कहीं नहीं मनाते ।
 वहाँ भी भद्राचलममें यह अुत्सव
 बड़े समारोहसे मनाया जाता
 है । वहाँ रामदासजीका बनाया
 हुआ श्री रामजीका मंदिर
 है । अिस मौकेपर वहाँ, लाखों
 यात्री आते हैं ।

ओी अत्सवमु आंध्र देशपु
 आँक्काँक ग्राममूलोनु अिटिलोनु
 कॉनियाडबडनु । पँद् अूळ्ळलो
 पलु दिनमुलु मुंदे दीनिकि
 अेर्पाट्लु जरुगुनु । ताटाकु
 पंदिळ्ळु अल्लि जनुलु कूर-
 चाँण्डुटकु चापलु परुप बडनु ।
 आनाडु श्री रामुल वारि पटमुनु
 बागुग अलंकरिचि अच्चट
 अुंचुदुरु । रमारमि पदकाँण्डु
 गंटलु पगटिकि पूज आरंभमगुनु ।
 कॉन्नि चोट्ल ओी पूज रँण्डु
 गंटल वरकु जरुगुनु । वेलकाँलदि
 जनुलु चाल श्रद्धतो
 आ पूजनु चूचुदुरु । पूज
 अयिन तरुवात प्रसादमु पुच्चु-
 काँन्दुरु । श्रीराम नवमि प्रसाद-
 मुलो वड़ पप्पु पानकमु ओी
 रँण्डु मुख्यमैनवि । पँसरु पप्पु
 नीटिलोनान बँट्टि अुप्पु कलि-
 पिन अदि वड़ पप्पु अनबडनु ।
 अिंदुलो निम्मपण्डु रसमुनु
 पच्चि मिरपकाययु कलुपुदुरु ।
 मंचि नीटिलो बँल्लमु कलिपि

यह अत्सव आंध्र देशके हर
 गाँव और घरमें मनाया जाता
 है । बड़े नगरोंमें कओी दिन
 पहलेसे ही अिसकी तैयारियाँ
 होती हैं । ताड़के पत्तोंका
 मंडप बनाकर लोगोंके बैठनेके
 लिअे चटाअियाँ बिछाओी जाती
 हैं । अुस दिन श्रीरामजीके
 चित्रको अच्छी तरह सजाकर
 वहाँ रखते हैं । करीब ग्यारह
 बजे दिनको पूजा आरम्भ होती
 है । कुछ जगहोंमें यह
 पूजा दो बजे तक चलती है ।
 हजारों लोग बड़ी श्रद्धाके साथ
 अुस पूजाको देखते हैं । पूजाके
 बाद प्रसाद प्राप्त करते हैं । श्री
 राम नवमीके प्रसादमें “वडा-
 पप्पु” और “पानकम” ये
 दोनों मुख्य हैं । मूँगकी दाल
 पानीमे भिगोकर नमक मिलाने-
 पर “वड़ा पप्पु” कहलाती है ।
 अिसमें नींबूका रस और हरी
 मिर्च भी मिलाते हैं । ठंडे
 पानीमें गुड़ मिलाकर “पानकम”

पानकमु चैयुदुरु। अिंदुलो निम्म
पंडु रसमुनु, सॉण्ठियुकूड कल्पु-
दुरु। वेसवि कालपु मध्याह्नमुन
चाल सेपु वरकु कूरचांनु जनुलु
ओ प्रसादमुनु पॉन्दि तृप्तिनां-
न्दुदुरु। पलुरु आ दिनमंतयु
मरेमि तिनरु।

श्री रामनवमि अुत्सवमुनकु
काँन्नि रोजलु मुंदुनु काँन्नि
रोजुलु तरुवातयु संगीतमु,
नृत्यमु, कथा कालक्षेपमुलु,
अुपन्यासमुलु मुन्नगुनवि जरु-
गुनु। पलु चोटल सीता
कल्याणमुनु श्री रामुलवारि
पट्टाभिषेकमुनु कूड काँनि-
याडुदुरु। ओ अुत्सवमुलुनु
जन्मोत्सवमु वल्लं गाराबमुग
काँनियाड वडुनु।

पूजलो ध्यान आवाहनादि
षोडशोपचारमुतो रामुलवारि
पटमु अर्चिम्प बडुनु। काँन्दरु
पदि दिनमुल वरकु सहस्र
नाम अर्चन चैयुदुरु। पलुरु
पदि दिनमुललो वाल्मीकि
रामायण पारायणमु आद्यन्तमु
काविन्तुरु।

बनाते हैं। असमें नींबूका रस
और सोंठ भी मिलाते हैं। गर-
मीके मध्याह्नमें देर तक बैठे
रहनेवाले लोग यह प्रसाद पाकर
तृप्त होते हैं। कभी लोग
अुस दिन और कुछ नहीं
खाते।

श्री रामनवमी अुत्सवके कुछ
दिन पूर्व और कुछ दिन बाद
संगीत, नाच, हरिकथा, व्याख्यान
आदि होते हैं। कभी जगहोंमें
सीता विवाह और श्री रामजी-
का राज्याभिषेक भी लोग मनाते
हैं। ये अुत्सव भी जन्मोत्सवके
समान समारोहके साथ मनाये
जाते हैं।

पूजामें ध्यान, आवाहन,
आदि सोलहों अुपचारोंके साथ
रामजीके चित्रकी अर्चना होती
है। कुछ लोग दस दिनतक
सहस्र नाम अर्चना करते हैं।
कभी लोग दस दिनोंमें वाल्मीकि
रामायणका पारायण आद्यन्त
कराते हैं।

श्री त्यागराज कीर्तन

श्री त्यागराज कीर्तन

रामभक्ति साम्राज्य—
मे मानवुल कब्बनो—मनस
(राम भक्ति)

आ मानवुल संदर्शन—
मत्यंता ब्रह्मानंदमु
(राम भक्ति)

ओ लागनि विवरिम्प लेनु—
चाल स्वानुभव वेद्यमु
लीला सृष्ट जगत्रय मने
कोलाहल त्यागराज विनुत
(राम भक्ति)

हे मन ! राम भक्ति
साम्राज्य जिन लोगोंको लग
(मिल) गया अन लोगोंसे मिलना
अत्यंत ब्रह्मानंद (दायक) है ।
(वह ब्रह्मानंद) यों है कहकर
वर्णन नहीं कर सकता ।

अत्यंत स्वानुभवसे ही वह
जाना जा सकता है; लीलामें ही
तीनों जगत्की सृष्टि करनेवाले
कोलाहलमय, त्यागराजके वंदित
(जो है उस) राम (की)
भक्तिका साम्राज्य.....।

५. श्री काळहस्ति ।

५. श्री कालहस्ति ।

मदरासुनुंडि कलकत्ता वेंळळु
दारिलो मदरासुनुंडि रमारमि
अँनभै मैळळ दूरमुन गूडूरु अनु
स्टेशन कलदु। अटुले मदरासुनुंडि
बाँम्बायि वेंळळु दारिलो रेणिगुंट
अनु स्टेशन कलदु । गूडूरुनुंडि
रेणिगुंटवरकु रैलु मार्ग मुन्नदि ।

मद्राससे कलकत्ता जानेके
रास्तेमें मद्राससे लगभग अस्सी
मीलकी दूरीपर गूडूर नामक
अेक स्टेशन है। वैसे ही मद्राससे
बम्बयी जानेके रास्तेमें रेणिगुंटा
नामक अेक स्टेशन है। गूडूरसे
रेणिगुंटातक रेल चलती है ।

आमार्गमुलो काळहस्ति अनु
स्टेशन अनुनदि । काळहस्ति
पवित्र कषेत्रमु । अक्कड़ शिवा-
लयमु अनुनदि । अच्चटि लिंगमु
वायु लिंगमु ।

ओ कषेत्रमुनकु श्री काळहस्ति
अनि पेरु । श्री अनगा सालें
पुरुगु; काळ अनगा सर्पमु;
हस्ति अनगा अेनुग । ओ कषेत्र-
मुन ओ मूडु जंतुवुलु भक्ति
सलुपुचुंडेननि कथ ।

वेल काँलदि संवत्सरमुलकु
मुंदु ओ कषेत्रमुन दट्टमैन अडवि
अुंडेनु । अच्चट आँक शिव-
लिंगमु अुंडेनु । आ लिंगमुनु
प्रतिदिनमुनु आँक अेनुगयु, सालें
पुरुगुनु पामुनु पूजिचुचुंडेनु ।
अेनुग पूजिचु पुष्पमुलनु तीसि-
वेसि सालें पुरुगु पूजिचुनु ।
दानिनि तीसिवेसि सर्पमु पूजिचु
चुंडेनु । अिट्लु प्रतिदिनमुनु ओ
मूडु जंतुवुलकुनु तमतम पुष्पमुलु
कनुपिचक पोवुट चेत आश्चर्यमु
कलुगुचुंडेनु ।

अुस रास्तेमें कालहस्ति नामक
स्टेशन है । कालहस्ति पवित्र
तीर्थ है । वहाँ शिवालय है ।
वहाँका लिंग वायु लिंग है ।

अिस कषेत्रका श्री कालहस्ति
नाम है । श्रीका अर्थ मकड़ी
है; काल माने सर्प; और हस्ति
माने हाथी । कथा है कि अिस
कषेत्रमें ये तीनों जीव भगवानकी
भक्ति करते थे ।

हजारों वर्ष पूर्व अिस कषेत्रमं
घना वन था । वहाँ अेक शिव-
लिंग था । अुस लिंगकी प्रति-
दिन अेक हाथी, अेक मकड़ी
और अेक सांप पूजा करते थे ।
जिन फूलोंसे हाथी पूजा करता
था अुसे मकड़ी हटाकर पूजा
करती थी; अुसको हटाकर
सांप पूजा करता था । अिस
तरह प्रतिदिन अिन तीनों
जीवोंको अपने अपने फूलोंके
न दिखाओ पड़नेसे आश्चर्य
होता था ।

आँकनाडु अेनुग अक्कड़े
 'निलवडि अेमि जरुगुचुन्नदनि
 चूचेंनु । सालें पुरुगुन्नु सर्पमुनु
 अक्कड वच्चुट चूचि दानिकि
 कोपमु वच्चेंनु । अदि आ
 रेंण्टिनि चंप प्रयत्तिचेंनु । अयिते
 आ रेंण्डुनु अेनुग याँक्क ताँण्डपु
 नासिका रंध्रमुन प्रवेशिचेंनु ।
 ओ बाध सहिप लेक अेनुग
 व्याकुल माँन्देंनु । तन ताँण्डमुनु
 पलु मारु भूमि पै काँट्टेंनु ।
 अयिते सर्पमुनु सालें पुरुगुनु
 अक्कड़े अुंडि पोयेंनु । अेनुग
 पूजचेय लेनुंदननु ताँण्डमु लोपलि
 बाध वल्लनु अक्कड़े अुंडि चच्चि
 पोयेंनु । सर्पमुनु सालेंपुरुगुनु
 ताँण्डमु लोपलने चच्चिपोयेंनु ।
 परम शिवुडु ओ मूडु जीव-
 मुलकुनु मोक्षमु अिच्चेंनु ।
 ओ कारणमु चेतने ओ क्षेत्र-
 मुनकु ओ पेरु कलिगेंनु ।

अेक दिन हाथी वहीं खड़ा
 होकर देखता था कि क्या
 होता है । मकड़ी और साँपको
 वहाँ आते देखकर अुसे क्रोध
 आया । अुसने अुन दोनोंको
 मारनेका प्रयत्न किया । पर
 वे दोनों हाथीकी सूँडके नासिका
 रंध्रमें घुस गअे । यह पीड़ा
 सह न सकनेसे हाथी व्याकुल
 हुआ । (अुसने) अपनी सूँड कअी
 बार जमीन पर दे मारी । पर साँप
 और मकड़ी वहीं रह गअीं ।
 पूजा न कर सकनेसे और सूँडके
 अन्दरके दर्दसे हाथी वहीं (रहकर)
 मर गया । साँप और मकड़ी
 भी सूँडके अन्दर ही मर गअीं ।
 परम शिवने अिन तीनों जीवोंको
 मोक्ष दिया । अिसी कारणसे
 अिस क्षेत्रका यह नाम पड़ा ।

६. राज राज नरेन्द्रुडु ।

सुमारु वेयि संवत्सरमुलकु
मुंडु आंध्र देशमुन चालुक्य
वंशपु राजुलु पालिचिरि । वीरि
राजधानि वेगि पट्टणमु । वीरु
अलिन देशमु वेगि देशमु ।

चालुक्य राजुललो राजराज
नरेन्द्रुडु चाल गाँप्पवाडु । वीडु
क्रि. श. १०२२ व संवत्सरमुन
सिंहासनारुडुड्येनु । अितडु
गोदावरि नदि तीरमुन आँक
नगरमु निर्मिञ्चि दानिनि तन
राजधानिग चेसिकॉनॅनु । आ
नगरमे राजमहेन्द्रवरमु ।

राज राजनरेन्द्रुडु विद्यावंतुडु ।
अितनिनि आश्रयिचि अनेक
कवुलु अुंडिरि । वारिलो नारायण
भट्ट, नन्नय्य भट्ट अनुवारु
चाल पेरु बडिन कवुलु । नारायण
भट्ट कन्नड़ भाषलो पण्डितुडु ।
आ भाषलो अतडु महाभारत-
मुनु ब्रासॅनु ।

६. राज राज नरेन्द्र ।

लगभग अेक हजार वर्ष पूर्व
आंध्र देशमें चालुक्य परिवारके
राजा राज करते थे । अनकी
राजधानी वेगिपट्टणम थी । जिस
देशका ये पालन करते थे वह
वेगि देश था ।

चालुक्य राजाओंमें राज राज
नरेन्द्र बहुत बड़े थे । ये सन्
१०२२ आ. में गद्दीपर बैठे ।
अिन्होंने गोदावरी नदीके किनारे
अेक नगर बसाकर अुसको अपनी
राजधानी बनाया । वही नगर
राजमहेन्द्रवरम (राजमण्डी) है ।

राज राजनरेन्द्र विद्वान थे ।
अिनके आश्रयमें कअी कवि थे ।
अुनमें नारायण भट्ट, और
नन्नय्या भट्ट बड़े नामी कवि
थे । नारायण भट्ट कन्नड़
भाषाके विद्वान थे । अुस
भाषामें अुन्होंने महाभारत
लिखा ।

राज राजनरेन्द्रु महाभारत-
मुनु तैलुगुलो ब्रायिप निश्चयि-
चैनु । नन्नय्य भट्टु नारायण
भट्टु सहायमुतो आंध्र महा-
भारतमु ब्राय नारंभिचैनु । आदि
पर्वमुनु सभा पर्वमुनु ब्रासि
अरण्य पर्वमुलो कौन्त भागमु
ब्रासि अतडु चनि पोयैनु । तरु-
वात मूडु वंदल संवत्सरमुल
वरकु ओ महाभारतमुनु ब्रायु-
वारु अँवरु लेक पोयिरि । मूडु
वंदल संवत्सरमुलु गडचिन पिदप
तिक्कन, यरैन अनु रँडु कवुलु
आ महाभारतमुनु पूर्ति चैसिरि ।
अिट्लु आंध्र महाभारतमुनु
रचिचिन वारु मूडु कवुलु ।
मूल प्रेरण-कर्त राज राज
नरेन्द्रु ।

तमिळ देशमुलोनि तंजावूरुनु
पालिचिन चोळ राजुलकुनु
वेंगिराजुलकुनु अदो सम्बन्ध
मुंडैनु अनि तैलियु चुन्नदि ।

राज राज नरेन्द्रने तेलुगू
भाषामें महाभारत लिखानेका
निश्चय किया । नन्नय्य भट्ट
नारायण भट्टकी सहायतासे
आंध्र महाभारत लिखने लगे ।
आदि पर्व और सभा पर्व
लिखनेके बाद अरण्यपर्वमें कुछ
अंश लिखकर वे मर गये ।
असके बाद तीन सौ सालतक
अस महाभारतको लिखनेवाला
कोओ नहीं हुआ । तीन सौ साल
बीतनेके बाद तिवकन और
यरैन नामक दो कवियोंने अुस
महाभारतको पूरा किया । यों
आंध्र महाभारतके रचयिता
तीन कवि थे । मूल प्रेरणा
देनेवाले राज राज नरेन्द्र थे ।

मालूम होता है कि तमिल
देशके तंजौरका पालन करने-
वाले चोल राजाओं और वेंगि
राजाओंका कोओ सम्बन्ध था ।

७. तिरुपति

भारत देशपु गॉप्प कषेत्र-
मुललो तिरुपति आँकटि । अदि
मदरासु नुंडि रमारमि वंद
मैळ्ळ दूरमुन पश्चिमोत्तरमुन
अुन्नदि । दीनिनि अुत्तर
भारतीयुलु बालाजी अंदुरु ।
तिरुपतिकि 'अेळुमल्लै' अनि
आँक पेरु कलदु । अदि तमिळ
पदमु । दीनिकि अेडु काँण्डलु
अनि अर्थमु ।

तिरुपतिकि रेंण्डु भागमुलु
कलवु । आँकटि कीळ् तिरुपति
अनियु मरि याँकटि मेल् तिरु-
पति अनियु पिलुव बडुनु । कीळ्
अनगा क्रिद; मेल् अनगा पैग ।
क्रिद अुंडु नगरमु पेंददि । अयिते
मुख्य मैन देवालयमु पै तिरु-
पतिलोने अुन्नदि । अच्चटिकि
वैळ्ळुटकु अेडु काँण्डलु दाट
वलयुनु । अटु तरुवात काँण्ड पै
गुडि अुन्नदि कावट्टि आ अूरिकि
अेडु काँण्डलु अनि पेरु कलिगैनु ।

भा. भा. तेलुगू—६

✓ ७. तिरुपति

भारतके बड़े तीर्थ स्थानोंमें
तिरुपति अेक है । यह मदरास-
से करीब अेक सौ मील दूर पर
पश्चिमोत्तरकी ओर है । अिसको
अुत्तर भारतके लोग बालाजी
कहते हैं । तिरुपतिका "अेळु-
मल्लै" अेक दूसरा नाम है । यह
तमिळ शब्द है । अिसका अर्थ
है "सात पहाड़ ।"

तिरुपतिके दो हिस्से हैं ।
अेक कील तिरुपति और दूसरा
मेल तिरुपति कहलाता है ।
'कील' माने नीचे है; मेल
माने अूपर । नीचे जो नगर है
वह बड़ा है । पर प्रधान मंदिर
अूपरके तिरुपतिमें ही है । वहाँ
जानेके लिअे सात पहाड़ पार
करने पड़ते हैं । अुसके बाद
पहाड़पर मन्दिर है अिसलिअे
अुस नगरका "सात पहाड़"
नाम पड़ा ।

ओ गुडि श्री वेंकटेश्वरल
गुडि । आदि शेषुनि काण्डगा
चेसि दानि पै भगवंतुडु वसिचु
चुन्नार । आ काण्डकु शेषाचल
मनि पेरु । पै गुडिलो अम्मवा-
रिकि प्रत्येकमुगा गुडि लेदु ।
लक्ष्म वानियंदे निवसिचुट
वल्ल भगवंतुनिकि श्रीनिवासुडु
अनि पेरु । क्रिदि तिरुपति नुडि
रमारमि मूडु मैळ्ळ दूरमुन
तिरुचानूरु अनु अूरिलो अम्म-
वारि गुडि अुन्नदि । अम्मवारि
पेरु “ अलमेलमंगै तायार । ”

तिरुपतिकि प्रति दिनमुनु
वंदल कॉलदि यात्रीकुलु वत्तुरु ।
ओ देवस्थानमुनकु प्रति नैल
यात्रीकुलवल्ल कलुगु आदायमु
रेंडु लक्षल रूपयलकंटै अँक्कुव ।
दशहरा समयमुन अिच्चट ब्रह्मो-
त्सवमु जरुगुनु ।

ओ देवालय कार्यमुलनु निर्व-
हिंचु समिति “ तिरुपति देव-
स्थानम् कमिटी ” अनवडुनु ।
ओ समिति प्रति दिनपु पूजलु,

यह मन्दिर श्री वेंकटेश्वरजी-
का है । आदिशेषको पहाड़ बना-
कर उसपर भगवान रहते हैं ।
उस पहाड़का नाम शेषाचलम्
है । ऊपरके मन्दिरमें भगवतीका
अलग मंदिर नहीं है । लक्ष्मी
अुसीमें रहती हैं अिसलिअे भग-
वानका श्रीनिवास नाम है ।
निचले तिरुपतिसे करीब तीन
मीलपर तिरुचानूर नामक नगर-
में भगवतीका मन्दिर है । भग-
वतीका नाम “ अलमेल मंगै
तायार ” है ।

तिरुपतिमें प्रतिदिन सैकड़ों
यात्री आते हैं । अिस देवस्थान-
की यात्रियोंसे प्रति मास आय दो
लाख रुपयोंसे अधिक की है ।
दशहरेके समय यहाँ ब्रह्मोत्सव
(वार्षिक अुत्सव) होता है ।

अिस मन्दिरके काम संभा-
लनेवाली समिति “ तिरुपति
देवस्थानम् कमेटी ” कहलाती
है । यह समिति दैनिक पूजाओं,

अुत्सवमुलु, गुडिमरामत्तु मुन्नगु
 कार्यमुलनु नडुपुनु । यात्रीकुलकु
 कावलसिन सौकर्यमुलु ओ
 समिति चेसि अुन्नदि । क्रिदि
 तिरुपतिलो स्टेशनकु समीपमुन
 ऑक पॅदद सत्रमु अुन्नदि । अंडु
 वंदल कॉलदि यात्रीकुलु अंड
 वच्चुनु । वारिकि वंट चेसि-
 कॉनुटकु पात्रमुलु अिव्ववडुनु ।
 क्रिन्दि तिरुपति नुंडि (ओ सत्र-
 मुनुंडि) कॉण्ड पै मोटर बस्सुलु
 पोवुचुन्नवि । ओ मोटरलु
 अिप्पुडे दादापु पदि संवत्सर
 मुलनुंडि पोवुचुन्नवि । अंतकु
 पूर्वमु कॉण्ड पै यात्रीकुलु नडचिये
 पोयॅडि वारु । अिप्पटिकिनि
 अनेकुलु नडचि पोवुचुन्नारु ।

ओ समिति पलु विद्यालयमुलु
 नडुपु चुन्नदि । वेंकटेश्वर विश्व
 विद्यालयमु देवस्थान सहायमु
 वल्लने आरंभमायॅनु ।

अुत्सव, मन्दिरकी मरम्मत,
 आदि काम कराती है । यात्रियोंके
 लिअे आवश्यक सुविधाअें
 अिस समितिने दी हैं । निचले
 तिरुपतिमें स्टेशनके पास अेक
 बड़ी धर्मशाला है । वहाँ सैकड़ों
 यात्री ठहर सकते हैं । अुनको
 रसोओके लिअे वर्तन दिअे जाते
 हैं । निचले तिरुपतिसे (अिस
 धर्म शालासे) पहाड़पर मोटर
 वसॅ जाती हैं । ये मोटरें अभी
 करीब दस सालसे चलती हैं ।
 अुसके पूर्व पहाड़पर यात्री पैदल
 ही जाया करते थे । अब भी
 कओी लोग पैदल ही जाते हैं ।

यह समिति कओी विद्यालय
 चलाती है । वेंकटेश्वर विश्व
 विद्यालय देवस्थानकी सहायतासे
 ही शुरू हुआ है ।

८. कण्णप्प नायनारु ।

श्रीकालहस्तिनि सम्बन्धिचिन
 आँक कथ विनुडि । आ वषेत्र-
 मुलो आँक वेटकाडु अुडँनु । वाडु
 प्रतिदिनमु भगवंतुनि अर्चिपक
 अे पनियु चेयडु । प्रतिदिनमु
 अुदयमुन पुष्पमुलु सेकरिचि
 भगवंतुनि अर्चिचुनु ।

आँकनाडु भगवंतुडु वानिनि
 परीक्षिष निश्चयिचँनु । आ
 वेटकाडु अुदयमुन पुष्पमुनु तीसि
 काँनि रागा लिंगमुयाँक्क कंठि
 नुडि रक्तमु कारुट चूचँनु । चाल
 जालिपडि वाडु आ कंठिनि
 परीक्षिचँनु । अंदु दँब तगिलि
 अुडँनु । वँण्टने वाडु तन चेतितो
 तन कन्नुनु तीसि लिंगमुयाँक्क
 कंठिलो दानिनि अुचँनु । रक्तमु
 कारुट आगँनु । अतनिकि चाल
 संतोषमु कलिगँनु । मरुनाडु वाडु
 पूजिप वच्चिचनप्पुडु मरियाँक कंठि
 नुडि नैत्तुरु कारुचुडँनु । भगवंतुडु
 नन्नु परीक्षिचु चुन्नाडु अनि

८. कण्णप्प नायनार ।

श्री कालहस्तिसे सम्बन्ध
 रखनेवाली अेक कहानी सुनिअे ।
 अुस वषेत्रमें अेक शिकारी रहता
 था । वह प्रतिदिन भगवानकी
 (पूजा) किअे बिना कोअी काम
 नहीं करता था । वह प्रतिदिन
 सवेरे फूल अिकट्ठा करके
 भगवानकी अर्चना करता था ।

अेक दिन भगवानने अुसकी
 परीक्षा लेनेका निश्चय किया।
 जब वह शिकारी सबेरे फूल
 लेकर आया तब अुसने देखा कि
 लिंगकी अेक आँखसे रक्त बह रहा
 है । बहुत दुखी होकर अुसने
 अुस आँखकी परीक्षा की ।
 अुसमें चोट लगी थी । तुरंत
 अुसने अपने हाथसे अपनी आँख
 निकालकर लिंगकी आँखमें
 अुसको बैठा दिया । रक्तका
 बहना बंद हो गया । अुसे बड़ा
 आनंद हुआ । दूसरे दिन जब
 वह पूजा करने आया तब दूसरी
 आँखसे रक्त बहता था । यह

अँरिगि आ वेटकाडु तन रँण्डव
कंटिनि अिव्व निश्चयिच्चँनु ।
अयिते रँण्डव कंटिनि तीसिन
पिदप भगवंतुनि कन्ननु गुत्तिचि
अक्कड तन कंटिनि अँचुट अँटुल?
भगवंतुनि कंटिपै तन चँप्पु सहित-
मैन कालुनूचि आ गुर्तुतोने
तन मरि आँक कंटिनि तीसि
अच्चट स्थापिच्चँनु । अतनि
औदार्यमुनु, बुद्धि चमत्कारमुनु
चूचि भगवंतुडु संतर्सिचि अतनि-
कि दर्शन मिच्चँनु ।

तमिळ देशपु भक्त कवुलले
वैष्णव कवुलकु “आळ्वारु”
अनियु शैव कवुलकु “नायन्मार”
अनियु पेरु । नायन्मार अरवै
मूडु । अंदुलोनाँकडु “कण्णप्प
नायनारु” । ‘कण्णप्प’ कु अर्थमु
‘कंटि’ । पै वेटगानिके आी पेरु ।
कन्नु भगवंतुनिकि समर्पिचि-
नंदुन अतनिकि आी पेरु कलिगँनु ।
अतनि मुंदु पेरु अेमो !

जानकर कि भगवान मेरी
परीक्षा ले रहे हैं अुस शिकारीने
अपनी दूसरी आँख देनेका
निश्चय किया । पर दूसरी
आँखको निकालनेके बाद
भगवानकी आँखको पहचानकर
वहाँ अपनी आँख रखे कैसे ?
भगवानकी आँखपर चप्पल-युक्त
अपना पैर रखकर अुसी पहचानसे
अपनी दूसरी आँख निकालकर
अुस जगहपर रख दी । अुसकी
अुदारता और बुद्धि चमत्कार
देखकर भगवान प्रसन्न हुअे और
अुन्होंने अुसे दर्शन दिअे ।

तमिल देशके भक्त कवियोंमें
वैष्णव कवियोंका “आल्वार”
और शैव कवियोंका “नायन्मार”
नाम है । नायन्मार तिरसठ हैं ।
अुनमें अेक ‘कण्णप्प नयनार’ है ।
‘कण्णप्प’ का अर्थ ‘आँखवाला’
है । अुपर्युक्त शिकारीका ही
यह नाम है । आँखें भगवानको
अर्पित कीं अिसलिअे अुसका यह
नाम हुआ । अुसका पूर्व-नाम
न जाने क्या था !

१. सामंतलु

१. कहावतें

१. नदि दाटे दाक माम नदी पार करो तबतक तो
मल्लय्या, दाटिन तरुवात (नाविक) मामा मल्लय्या हैं;
बोडि मल्लय्या । पार पहुँचनेके बाद गंजा
मल्लय्या । ("काज परे कुछ और
है काज सरे कुछ और")
२. अत्ता आँकिटि कोडले । सास भी (कभी) किसी
घरकी बहू ही तो (थी) ।
३. अडुसु ताँक्कनेल कालु कीचड़ क्यों रौंधो, पैर क्यों
कडुगनेल ? धोओ ?
४. ता जँडु कोति वन मँल्ल स्वयं भ्रष्ट (हुअे) बंदरने
जँरिचँ । सारा वन भ्रष्ट किया ।
५. अँन्त चँट्टुकंत गालि । जितने पेड़ हैं (अनुकी)
अुतनी हवा ।
६. नलुगुरितो पाटु नारायण । (आप अकेले जिसे कर न
पाअें अुसे) चार लोगोंके
साथ कर डालना ।
७. पिट्ट काँञ्चम् कूत घनम् । चिड़िया तो छोटी पर शोर
बड़ा (छोटे मुँह, बड़ी बात) ।
८. दुन्न अीनिदंटे दूडनु मानों किसीने कहा कि
कट्टुन्नट्लु । सांड़ने बच्चा दिया तो कहा
बछड़ेको खंभेसे बांधो ।

९. अूरिलो पॅण्डिल, कुक्कुकु गाँवमें शादी—कुत्तोंमें
संदडि । हलचल ।

१०. अंदर पल्लकि अँकिते यदि सब पालकीपर सवार
मोसेवारँवर ? हों तो ढोअे कौन ?

१० कवितलु

१. सरसमु विरसमु कॉरके
परिपूर्ण सुखंबु लधिक
बाधल कॉरके
पँरुगुट विरुगुट कॉरके
धर दगुट हँचु कॉरके
तथ्यमु सुमती ।

२. कमलमुलु नीट बासिन
कमलाप्तुनि रश्मिशोकि
कमलिन भंगिन्
तमतम नँलवुलु तप्पिन
तम मित्रुलु शत्रुलौट
तथ्यमु सुमती ।

१० कविताअें

मित्रता शत्रुताके लिअे ही है
परिपूर्ण सुख अधिक बाधा
(पीड़ा, कष्ट) के लिअे है;
बढ़ना टूटनेके लिअे ही है
दाम (कीमत) का घटना बढ़ने-
के लिअे ही है—यह सत्य है ।

कमल (यदि) पानी (को) छोड़े
(तो) कमलाप्त (सूर्य) की रश्मि
(पाकर) के लगनेसे जैसे सूख
जाता है, (वैसे ही) अपना अपना
स्थान यदि छूट जाअे तो अपने
मित्रका शत्रु बनना निश्चित है ।

३. कनकपु सिंहासनमुन

शुनकमुकूर्चुड बँट्टि

शुभलग्नमुनन्

दनरग बट्टमु कट्टिन

वँनुकटि गुण मेल मानु

गदरा सुमती ।

सोनेके सिंहासनपर यदि

कुत्तेको बिठाकर शुभ लग्नमें

मुकुट पहनाओ (तो भी) वह

अपना पिछला गुण क्यों छोड़े

—है न ?

४. पुत्रोत्साहमु तंड्रिकि

पुत्रुडु जन्मिचि नपुडँ

पुट्टु-जनुला

पुत्रुनि कनुगॉनि पाँगडग

पुत्रोत्साहंबु नाडु पाँन्दुरु

सुमती ।

पिताका पुत्रोत्साह पुत्रके

जन्मते ही पैदा नहीं होता ।

पुत्रजन्मका वास्तविक आनन्द

अस दिन मिलता है जब

पुत्रको देखकर लोग अस (पुत्र)

की प्रशंसा करते हैं ।

५. अप्पिच्चु वाडु वैद्युडु

नँप्पुडु नँडतँगक पारुनेरुनु

द्विजुडुं

जाँप्पडिन अर नुंडुमु

चाँप्पडकुन्नट्टि यूरु

चाँरकुमु सुमती ।

अधुआर देनेवाला, वैद्य, सदा

बिना विच्छेदके बहनेवाली नदी,

ब्राह्मण—ये जहाँ प्रविष्ट हैं अस

नगरमें रहो; जहाँ ये प्रविष्ट

नहीं हैं वहाँ तुम प्रविष्ट न

होओ ।

६. अपकारिकि नुपकारमु अपकारीका अपकार करना
विपरीतमु काटु सेय कोओ विचित्र (बात) नहीं ।
विवरिपंगा व्योरा बताओ तो (मालूम
नपकारिकि नुपकारमु पडेगा कि) अपकारीकी बुराअि-
नैपमैन्तक सेयुवाहु योंकी चिन्ता किअे बिना असुका
नेपैरि सुमती । अपकार करनेवाला ही विज्ञ है ।
७. ऐनग ननग राग मतिश बार बार गानेसे राग अच्छा
अिल्लुचुनुंडु बनता है, बार बार खानेसे
तिनग तिनग वेमु तिय्य नुंडु नीम मीठा बनता है ।
साधनमुन पनुलु समकूरु अस संसारमें साधनसे काम
धरलोन बनते हैं । (वेमन नामक कवि-
विश्वदाभिराम विनुरवेम । के सब पद्योंके अन्तमें “ विश्व-
दाभिराम विनुर वेम ”—सुनरे
वेमा विश्वका अभिराम—रहता
है ।
८. चंप दगिन यट्टि शत्रुवु तन मारने योग्य शत्रु (यदि)
चेत हाथमें आजाव तो (असकी)
जिक्कैनेनि कीडु सेयरादु बुराओ नहीं करनी चाहिअे;
पाँसग मेलु चेसि अुचित भलाओ करके विदा
पाँम्मनुटे चालु करना ही पर्याप्त है । (विश्व)
विश्वदाभिराम विनुरवेम

९. लोभिवानि जंप

लोकंबु लोपल
मंदु वलदु वेरें मतमु गलदु
पैक मडिगिनंत भग्गुन पडि
चच्चु

विश्वदाभिराम विनुर वेम ।

लोभीको (कंजूसको) मारने

(के लिये) संसारमें अन्य दवा
नहीं चाहिये; अपाय अक है;
पैसा मांगते ही (वह) धचसे
गिरकर मर जायगा । (विश्व)

✓ १०. कुलमुलो नाँकण्डु

गुणवंतुडुंडिन
कुलमु वल्लयु वानि गुणमुचेत
वल्लयु वनमुलोन

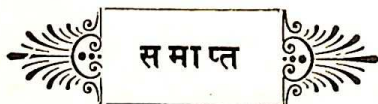
मलयजंबन्नट्लु
विश्वदाभिराम विनुर वेम ।

परिवारमें यदि अक गुण

वान हो तो अुसके गुणसे परि-
वार प्रतिष्ठित होगा । वनमें
अक चन्दन हो तो अुससे जैसा

वन

(विश्व)



तल्लुगु लिपि

स्वर

అ	ఆ	ఇ	ఈ	ఉ	ఊ	ఋ	ౠ	అ	ఱ
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ		
ఎ	ఏ	ఐ	ఒ	ఓ	ఔ	అం	అః		
अँ	अऐ	अै	आँ	आो	औ	अं	अः		

तल्लुगु में ऋ का दीर्घ, ऐ का ह्रस्व, ओ का ह्रस्व, ये तीन स्वर अधिक हैं। इनके अलावा लृ और उसका दीर्घ—ये दो अधिक स्वर भी हैं।

ऐ के उच्चारण में हिन्दी में बहुधा ऐ की ध्वनि सुनाई पड़ती है। पर तल्लुगु में इ की ध्वनि सुनाई पड़ती है। वैसे ही औ के उच्चारण में तल्लुगु में उ की ध्वनि सुनाई पड़ती है। अं का उच्चारण अम् स्पष्ट मकार युक्त है।

आम तौर पर तल्लुगु स्वरों के उच्चारण में हिन्दी की अपेक्षा कुछ अधिक समय लगता है। अ का उच्चारण हिन्दी की अपेक्षा कुछ अधिक समय का है पर इतना नहीं कि दीर्घ बन जाए।

व्यंजन

क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	
श	ष	स	ह	
क्ष	त्	ल्	ळ	

नागरी में जितने व्यंजन हैं वे सब तेलुगु में हैं। कुछ और अधिक भी हैं। च वर्ग में दो नए अक्षर हैं—च और ज के रूपान्तर। इनका उच्चारण करीब करीब त्स और द्ज के समान है। इन अक्षरों के भेद के कारण अर्थ में अंतर आ सकता है। 'चाप' का अर्थ मछली है और 'त्साप' का अर्थ चटाई है। एक नया अक्षर ు है; यह र का तीव्र रूप है पर 'र' नहीं। एक और नया अक्षर ఱ महाराष्ट्र अक्षर के समान है।

अन्य व्यंजनों का उच्चारण हिन्दी का सा है।

बारहखड़ी

स्वरो के चिन्ह तेलुगु में यों हैं :

అ	ఆ	ఇ	ఈ	ఉ	ఊ	ఋ	ౠ	ఎ	ఐ
ఁ	ఌ	఍	ఐ	ఒ	ఓ	ఔ	ౡ	అ	ఐ
ఎ	ఏ	ఐ	ఒ	ఓ	ఔ	అ	ఐ		
ఁ	ఌ	఍	ఐ	ఒ	ఓ	ఔ	ౡ	ఁ	ఌ

आ की मात्रा अक्षरों के ऊपर लगायी जाती है। पर ష (प) ష (फ) ష (ष) और ష (स) में बीच में लगायी जाती है :
క, చ, ల आदि ష, ష, ష, ష. ह ష अक्षर में पहले ही
चिन्ह है इसलिए उसका दीर्घ ష है।

अि की मात्रा अवधरो के ऊपर लगायी जाती है : ई, ४, ॢ, ० आदि पर ॢ, घि, ॢ, टि, ॢ, णि, ॢ, पि, ॢ, फि, ॢ (यि) ॢ (लि) ॢ (षि) ॢ (हि) ये विशेष ध्यान देने योग्य हैं ।

अ की मात्रा अ की मात्रा के समान लगायी जाती हैं ।

अु और अू की मात्राएँ भक्वर के बाजू में दाईं ओर जोड़ी जाती हैं ।

क, कू (कु, कू) ल, लू (लु, लू) म, मू (मु, मू) आदि ।
 ङ. ङू (जु, जू) ष, षू (पु, पू) फ, फू (फु, फू) भ, भू (बु, बू) ये विशेष रूप हैं ।

अ और अ की मात्राएँ व्यंजनों से अलग दाँओं ओर बाजू में लगाए जाते हैं। क, ख, ग, घ आदि।

अे ह्रस्व और दीर्घ दोनों की मात्राएँ अक्षर के ऊपर लगायी जाती हैं : उ, ण, ऌ आदि ऐ, औ, ऎ, औ ये विशेष रूप हैं ; अिन व्यंजनों में 'अे' की मात्रा व्यंजन को नहीं छूती ।

अै की मात्रा के दो खंड हैं—एक अक्षर के ऊपर और दूसरा अक्षर के नीचे लगाया जाता है। उ, ॐ, ष्ण आदि ।

ओ, ह्रस्व और दीर्घ तथा औ की मात्राएँ अक्षरों के ऊपर लगायी जाती हैं। ङा, ङाँ, ङा, ङाँ, ङाँ, ङाँ आदि।

अनुस्वार और विसर्ग की मात्राएँ अक्षर के पार्श्व में दाँऔं ओर अलग लगायी जाती हैं।

ङ	ङा	ङ	ङी	कु	कू	कृ	
क	का	कि	की	कु	कू	कृ	
ङ	ङा	ङ	ङी	ङा	ङाँ	ङाँ	ङाँ
क	के	कै	काँ	को	कौ	कं	कः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चृ	
च	चा	चि	ची	चु	चू	चृ	
च	चे	चै	चाँ	चो	चौ	चं	चः
च	चे	चै	चाँ	चो	चौ	चं	चः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टृ	
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टृ	
ट	टे	टै	टाँ	टो	टौ	टं	टः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	
व	वा	वि	वी	वु	वू	वृ	
व	वे	वै	वाँ	वो	वौ	वं	वः
व	वे	वै	वाँ	वो	वौ	वं	वः

संयुक्ताक्षर

यहाँ तेलुगु की एक विशेषता है। हर व्यंजन का एक चिन्ह है। नागरी के संयुक्ताक्षरों में मूल व्यंजन का (जिसके साथ दूसरे व्यंजन का मेल होता है उसका) खंडित रूप या चिन्ह रहता है और दूसरा (अर्थात् नया जुड़नेवाला व्यंजन) पूरा रहता है और इसी के साथ स्वर-चिन्ह लगाये जाते हैं। पर तेलुगू में मूल व्यंजन पूरा रहता है—उसी के साथ स्वर-चिन्ह लगाया जाता है और उसके साथ दूसरे व्यंजन का खंडित रूप या चिन्ह लगाया जाता है। सत्कार—यहाँ (दूसरे) संयुक्ताक्षर में त और क का मेल है; नागरी में त का खंडित रूप है और क पूरा पूरा लिखा हुआ आकार चिन्ह युक्त है। पर तेलुगू ట न केवल पूरा है बल्कि आकार चिन्ह युक्त भी है उसके साथ (क) క का चिन्ह ట- लगाया जाता है టక-४.

व्यंजन चिन्ह :

క	ఁ	ఖ	ఖ	గ	గ	ఘ	ఘ	జ
చ	చ	ఛ	ఛ	జ	జ	ఝ	ఝ	ఞ
ట	ట	ఠ	ఠ	డ	డ	ఢ	ఢ	ణ

త	ధ	ద	ధ	న
ప	ప	బ	భ	మ
య	ర	ల	వ	
శ	ష	స	హ	
	ఱ	క		

—

हमारे विशेष प्रकाशन

धरतीकी ओर [उपन्यास]

सुप्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यासका हिन्दी अनुवाद

मूल लेखक—श्री शिवराम कारन्त

मूल्य—रु. ५. ००

सोरठ तेरा बहता पानी [उपन्यास]

गुजरातीके सुप्रसिद्ध उपन्यासका हिन्दी अनुवाद

मूल लेखक—स्व. जवेरचन्द मेघाजी

मूल्य—रु. ३. ००

लोकमान्य तिलक [जीवन-चरित्र]

लेखक—प्राध्यापक श्री भी. गो. देशपांडे

मूल्य—रु. ३. ००

प्राप्तिस्थान—१. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

२. राजकमल प्रकाशन (प्रा.) लि.

प्रयाग, दिल्ली, बम्बई

प्रथम संस्करण—२०००

मञ्जी, १९५९

मूल्य—रु. १.२५ न. पैसे
(सर्वाधिकार सुरक्षित)

प्रकाशक :—मोहनलाल भट्ट मंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा

मुद्रक :—मोहनलाल भट्ट, राष्ट्रभाषा प्रेम, हिन्दीनगर, वर्धा